सांस्कृतिक इतिहास

Cultural History

2

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिमाणों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several stories high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of temple built according to the proportionate measurements laid down in the *Shastras.*

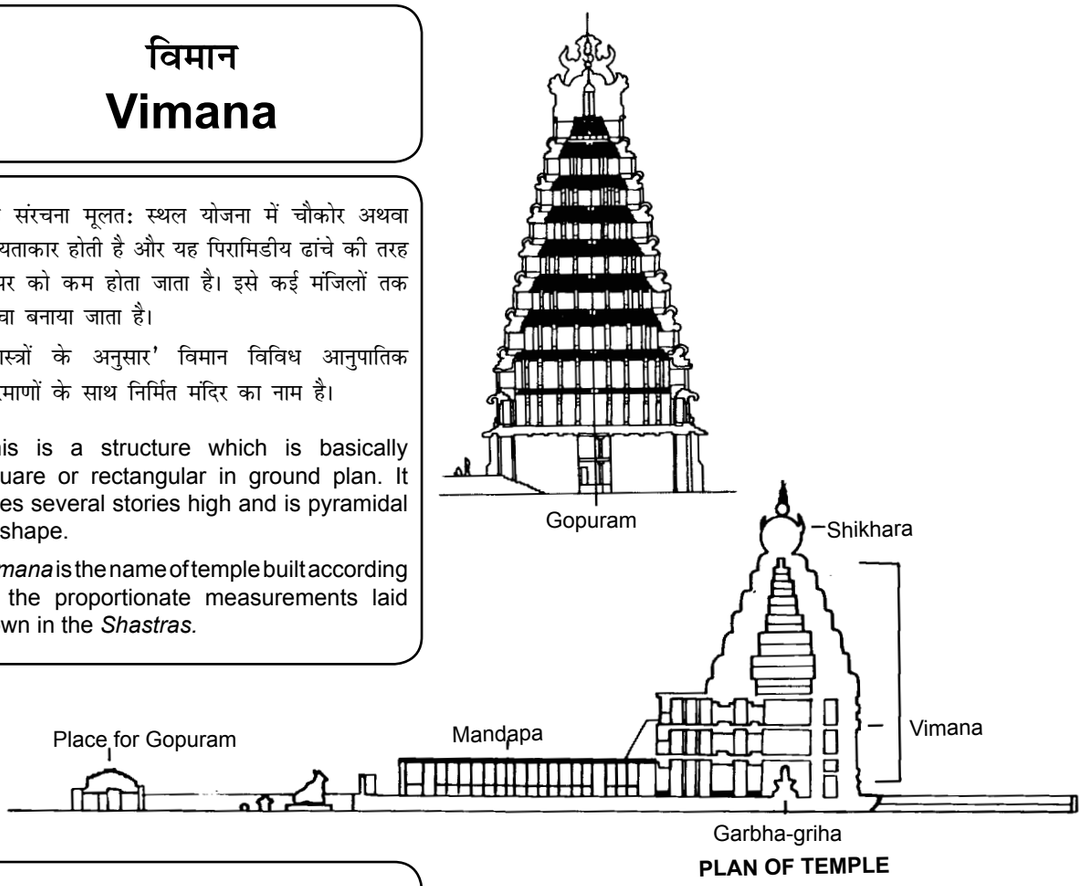

PLAN OF TEMPLE

गोपुरम
Gopuram

'गोपुरम' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश द्वार है। गोपुरम शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंज़िलें ऊंचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost stories are vertical in order to give s stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वारा मंडप) होता है, जहां पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में उदाहरणार्थ–मामल्लापुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थ मंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch—like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mamallapuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the *Shikhara* meaning 'head' has been derived from 'Shikha', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

गर्भ–गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख प्रतिमा को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभार बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भांति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपनी सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The *Garbha-Griha* is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

इस शैक्षणिक संग्रह में भारतीय भवन निर्माण कला, मूर्तिकला व चित्रकला पर 24 सचित्र उदाहरणों को सम्मिलित किया गया है। भारतीय इतिहास के मध्ययुगीन काल से संबंधित इन कार्यों का हमारे विद्यालयों के पाठ्यक्रम में उल्लेख किया गया है और ये 7वीं से 16वीं सदी के बीच की महान उपलब्धियों के अवशेष हैं।

लोगों की कलात्मक अभिव्यक्ति ऐतिहासिक सूचनाओं का एक बहुमूल्य स्रोत है और उस समय की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों की पूरी जानकारी देती है। उदारहण के लिए तात्कालिक वेशभूषा और आभूषण जो हमें प्रतिमाओं पर दिखाई देते हैं, उनसे हमें पता चलता है कि उस समय भी जुलाहा (बुनकर) और सुनार होते थे और विविध प्रकार के व्यवसायों ने इस ऐतिहासिक काल विशेष में बहुत उन्नति की थी।

यहां मध्यकाल तथा बीसवीं सदी के लोगों की जीवन-शैली में अनेक समान तथ्य पाए जाते हैं। आज की हमारी भाषाएं, हमारा खान-पान और वस्त्र, उस काल में भी बहुत प्रसिद्ध थे।

मध्ययुगीन काल में कन्नौज के चारों ओर के क्षेत्र पर प्रतिहारों, पालों तथा राष्ट्रकूटों के विशाल राजवंश का शासन था। दक्षिण तथा पूर्वी भारत के अधिकांश भाग पर चोल, चालुक्य तथा गंग राजाओं का अधिकार था। मध्ययुगीन काल के अंतिम भाग के शुरू में दिल्ली सल्तनत, बहमनी तथा विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ।

7वीं से 16वीं सदी के मध्ययुगीन काल से संबंधित इस शैक्षणिक संग्रह को दो भागों में बांटा गया है-भारत के विभिन्न प्रदेशों के स्मारक-चिह्न तथा ऐतिहासिक इमारतों में। इस संग्रह में जिन स्मारक-चिह्नों का वर्णन किया गया है, उनका उल्लेख पूर्व संग्रह (सैट) सांस्कृतिक इतिहास भाग-1 और सांस्कृतिक इतिहास भाग-3 में भी किया गया है। चूंकि इस काल में बहुत सी उत्कृष्ट इमारतों का निर्माण किया गया था इसलिए उनमें से कुछेक को चुनना बहुत मुश्किल काम है। यद्यपि हम यह आशा करते हैं कि हम यहां जिन अनेक महत्वपूर्ण स्मारक-चिह्नों को प्रस्तुत कर रहे हैं, उनकी सहायता से आप उस काल की राजसत्ता, वैभव और भारतीय संस्कृति के विकास में उस काल के लोगों के योगदान के महत्व का मूल्यांकन करने में समर्थ हो पाएंगे।

इस शैक्षणिक संग्रह का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत की संस्कृति और इतिहास के बारे में जानकारी देना तथा अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह आशा की जाती है कि यह संग्रह आपको भारतीय कला के सौंदर्य के प्रति सुग्राही (सचेतन) बनाएगा तथा भारत की समृद्ध नानाविध सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रेम, रुचि व जागरूकता उत्पन्न करेगा।

This Cultural History Package consists of 24 illustrated examples of Indian architecture, sculpture and painting. These work of art belong to the medieval period of Indian History as is mentioned in the school syllabus and traces the artistic achievements of our culture between the 7th and 16th centuries C.E.

The artistic expression of people through the ages is a valuable source of historical information and provides insights into the existing social and economic conditions. For instance, from costumes and jewellery, seen in sculptures, we know there must have been weavers, goldsmiths and other traders during that particular historical period.

There are many common factors in the life style of people of the 20th century and those of the medieval period. The languages that we now speak, the food we eat and the clothes we wear, were becoming popular during that period.

During the medieval period large empires of the Pratiharas, Palas and Rashtrakutas ruled over the area around Kanauj. The Pallavas, Cholas, Chalukyas and Gangas occupied much of southern and eastern India. The later part of the medieval period from the 13th century onwards saw the rise of the Delhi sultanate, and others like the Bahmani and Vijayanagar kingdoms.

The Cultural History Package on the medieval period (7th to 17th century C.E.) has been divided into two parts to cover a number of monuments and historical buildings from different parts of India. The monuments represented in this Package overlap with some of those in the sets of Cultural History Part 1 and Cultural History Part 3. Many great buildings were constructed during this period and it has been very difficult to select only a few. It is hoped that, even though a number of important monuments have been left out, you will still be able to appreciate the power, grandeur and importance of the contributions of people living during this period, to the development of Indian culture.

The objective of the Cultural History Package is to encourage students to study and learn about the development of India's culture and history, sensitize them to the beauty in Indian art and create in them a love and concern for their cultural heritage.

पल्लव

पल्लवों ने 6वीं-9वीं ईसवी सदी के दौरान दक्षिण भारत के एक विशाल क्षेत्र पर शासन किया था। उनके साम्राज्य की राजधानी कांचीपुरम् थी और महाबलिपुरम् में बंदरगाह था। इन दोनों स्थानों से ही दक्षिण भारत के मंदिरों की भवन निर्माण कला की शैली के विकास के बारे में अध्ययन किया जा सकता है। आरम्भ में इन मंदिरों का निर्माण एक छोटे कमरे की इमारत के रूप में शुरू हुआ और बाद में बहुत विशाल रूप में विकसित हुआ, जिसमें सारा शहर इन मंदिरों की दीवारों से घिरा होता था।

चोल

चोल राजवंश ने दक्षिण भारत के राज्यों को एकीकृत किया, सिंचाई व्यवस्था का निर्माण करने के साथ कृषि में सुधार किया और श्रीलंका, बर्मा तथा दूरस्थ पूर्वी देशों के साथ व्यापार को बढ़ाया। 10-13वीं ईसवी सदी और राजा चोल तथा राजेन्द्र चोल राजाओं के शासनकाल के दौरान तंजावूर, दारासुरम तथा चिदम्बरम में भव्य मंदिरों तथा शिल्प केन्द्रों की स्थापना की गई। इन मंदिरों तथा उनकी पत्थर व कांस्य की प्रतिमाओं एवं भितिचित्रों का अध्ययन करने से पता चलता है कि उस समय संगीत, नृत्य तथा साहित्य आदि कलाओं को भी राज्य का संरक्षण प्राप्त था। चोल राजाओं का अनुसरण अन्य राजवंशों-चेरों, पाण्डयों तथा नायकों के राजवंशों ने भी किया, जिन्होंने इन मंदिरों तथा इमारतों का और भी विस्तार किया तथा और भी भव्य व विराट् रूप में उनका निर्माण करवाया।

पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य

छठीं सदी में चालुक्यों ने मध्य भारत के अधिकांश भाग को जीत कर एक समय के लिए एकीकृत किया और उसे एक सांस्कृतिक रूप प्रदान किया, जिसने आने वाले समय में भारत के अन्य भागों में कला के विकास को प्रभावित किया। चालुक्य राजवंश में पुलकेशिन प्रथम एवं पुलकेशिन द्वितीय जैसे महत्वपूर्ण शासक थे, जिन्होंने दक्षिण के पल्लव राजा को हराया था और वे स्वयं पल्लवां की कांचीपुरम की कलात्मक विरासत से प्रभावित थे। तीन स्थानों बदामी, एहोले और पट्टदकल में अनेक मंदिर बने हुए हैं जिनके भवनों का नमूना तथा भू-योजना भिन्न-भिन्न है। मंदिर के निर्माण में शिल्पकारों ने विविध प्रकार की बनावटों का प्रयोग किया हैं। यहां के मंदिरों की बनावटों का इस्तेमाल बाद में पूर्वी, मध्य, पश्चिमी तथा दक्षिणी भारत के मंदिरों के निर्माण में भी किया गया।

होयसाल

बाद के चालुक्य तथा होयशाला शासकों ने कर्नाटक के मंदिर निर्माण की अनूठी शैली प्रदान की, जो कि मैसूर तथा हसन जिले के बेलूर, हेलीबिड और सोमनाथपुर में देखने को मिलती है। इस क्षेत्र में हम कुछ बहुत प्राचीन चट्टानों को भी पाते हैं, जिसे धारवाड़ स्तरित चट्टानें कहा जाता है। इसके पत्थर का रंग गहरा, हल्का हरा व काले रंग का है, जो इन मंदिरों तथा यहां की मूर्तिकला को एक विशिष्ट ओजस्विता प्रदान करता है। यह जाली से पूरी तरह ढका हुआ है और जाली का यह काम ज्यादातर महीन लेस जैसी नक्काशी के द्वारा सम्भव हुआ है।

हेलीबिड चालुक्य राजवंश की राजधानी थी और इसके मंदिर इसे बहुत प्रभावशाली व समृद्ध क्षेत्र बनाते हैं। मंदिर निर्माण की विलक्षण शैली की विशेषताएं निम्न हैं :

1. मंदिर का नक्शा सितारे की आकृति में बना है।

Pallavas

The Pallavas ruled a large region of south India from the 6th to 9th century C.E. The capital of their empire was at Kanchipuram and the port Mahabalipuram. In both these places, it is possible to study the evolution of the south Indian style of temple architecture beginning from a small one roomed building till it grew so large that its walls encompassed the whole town.

Cholas

The Chola empire unified the kingdom of southern India, improved agriculture with the construction of irrigation system and enhanced trade with Sri Lanka, Burma and other countries of the Far East. During the 10th to 13th century C.E. in the rule of Rajaraja Chola, and Rajendra Chola, magnificent temples and craft centres were established at Thanjavur, Darasuram and Chidambaram. A study of these temples, their stone and bronze sculptures and murals reveal that the arts of music, dance and literature also received patronage. The Cholas were followed by other dynasties—the Cheras, Pandyas and Naykas who enlarged upon the earlier temples and buildings.

Western Chalukyas

In the 6th century, the Chalukyas conquered a large part of Central India, unifying it for a period, and giving to it a culture that was to influence the development of art in other parts of India, in times to come. The Chalukyan dynasty had important rulers like Pulakesin I and II who defeated the southern Pallava King and were themselves influenced by the artistic heritage of the Pallavas of Kanchipuram. Three sites of Badami, Aihole and Pattadakal have a number of temples each with different ground plans and structural forms, the architect was experimenting with a variety of designs for the temple. These designs were later modified and used in the temples found in eastern, central, western and southern India.

Hoysalas

The later Chalukyas or Hoysala rulers gave to Karnataka, a unique temple design which is seen at Belur, Halebid, and Somnathpur, now in the districtis of Mysore and Hassan. In this area, we find some of the most ancient rocks of the earth's crust, called Dharwar schist. It is a dark, greenish black stone, that gave to these temples and sculptures a particular glow, and is so finely textured that almost lace-like carving was possible.

Halebid was the capital at the Chalukyan empire and its temples speak of a very prosperous rich era. The characteristics of this unique style of temple architecture are :

— the plan of the temple is star shaped

2. मंदिर का निर्माण एक चबूतरे पर किया गया है तथा बाहरी प्रदक्षिणा के लिए इसका पर्याप्त विस्तार किया गया है।

3. मंदिर प्रतिमाओं से पूरी तरह सजा हुआ है। प्रतिमाएं क्षितिजिय समतलों के घुमावों के आधार से शुरू होकर शिखर की चोटी एक चली गई हैं। मूर्तिमय किनारों पर जानवरों, पौराणिक कथाओं के पात्रों, रामायण, महाभारत तथा कृष्ण की दंत-कथाओं के दृश्यों के साथ देवताओं की आकृतियां, दीवारगीर आकृतियां और होयसाला साम्राज्य के चिह्न 'शेर' की आकृति बनी हुई है।

विजयनगर साम्राज्य

प्रसिद्ध शासकों देवराय और कृष्णदेवराय ने विजयनगर साम्राज्य को महान वैभव प्रदान किया। अपने वैभव के दौरान विजयनगर इस समय आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक के प्रदेशों से घिरा हुआ था। हाल ही में की गई हम्पी राजधानी की खुदाई से मिले प्रमाणों से पता चलता है कि यह साम्राज्य अत्यंत वैभवशाली और शक्तिशाली था। दक्कन पठान से बहुसंख्यक मात्रा में हीरे तथा बहुमूल्य पत्थरों की प्राप्ति होती थी, जो राज्य को आर्थिक लाभ व वैभव प्रदान करते थे। मुस्लिम शासकों से हार जाने के बाद यह साम्राज्य और हम्पी राजधानी नष्ट हो गई। अब केवल साहित्य तथा शिल्पकला के अवशेषों द्वारा ही इसके वैभव के बारे में जाना जा सकता है।

चंदेल शासक

खजुराहों एक छोटा सा कस्बा है और यहां कुछ विश्व प्रसिद्ध मंदिरों के अवशेष विद्यमान है। चंदेल राजाओं का साम्राज्य, वैभव और शहर अब अदृश्य हो चुके हैं, केवल खजुराहों के लगभग एक हजार साल पुराने इन मंदिरों में ही हम उस काल की महान सांस्कृतिक गतिविधियों की एक झलक देख सकते हैं। यहां के करीब 30 मंदिर भगवान शिव, विष्णु और जैन देवताओं को समर्पित हैं। इन मंदिरों की कुछ विशेषताएं हैं, जिन्हें मध्य भारत शैली के नाम से जाना जाता है और इनकी एक विशिष्ट विशेषता-ऊंचा चबूतरा है, जिस पर मंदिरों का निर्माण किया गया है। मंदिर के लिए आरोही छत का निर्माण किया गया है। बुलंद शिखर की चोटी तक आंखों का समूचा दृश्य एक विशाल पर्वतमाला की तरह दिखाई देता है। चबूतरे की दीवारें और मंदिर के विमान की दीवारें जुलूस में जानवरों, दरबारी जीवन के दृश्यों, देवताओं, मैथुन-आकृतियों और फूलों की बनावट से सजी हुई हैं।

पूर्वी गंग

10वीं-11वीं सदी में एक नए शक्तिशाली राजवंश-पूर्वी गंग राजवंश का उदय हुआ। इस राजवंश के सबसे प्रसिद्ध शासक नरसिम्हा देव प्रथम ने ओड़िशा के कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था।

ऐतिहासिक सम्पर्क तथा पड़ोसी राज्यों के संबंध होने के कारण इस प्रदेश की मूर्तिकला और भवन निर्माण शैली भी अन्य प्रदेशों की तरह अत्यंत प्रभावशाली है। यहां ओड़िशा की अनेक प्रजातियां हैं, जिन्होंने इस प्रदेश की कलात्मक विरासत-दस्तकारी, बुनाई, आभूषण, वस्त्र तथा रीति-रिवाजों में अपना सहयोग दिया है। मंदिरों का निर्माण के संदर्भ में सांस्कृतिक गतिविधियों का मुख्य क्षेत्र भुवनेश्वर, पुरी तथा कोणार्क के आस-पास ही फैला हुआ था। यहां से मंदिरों के इतिहास की खोज की जा सकती है, जिनका निर्माण पहले लघु व सरल रूप में हुआ था तथा बाद में अनेक मंदिरों के विशाल समूह के निर्माण, उत्कृष्ट वैभव तथा सौन्दर्य के रूप में उनका विकास हुआ।

— the temple is built on a platform which is wide enough for an exterior pradakshina

— the temple is profusely decorated with sculptures

The sculptures begin from ground level in horizontal bands that continue right up to the top of the *shikhara*. The sculptured borders are of animals, mythological characters, scenes from the Ramayana, Mahabharata and Krishna legends alongwith images of deities, bracket figures and the emblem of the Hoysalas, the lion.

The Vijayanagar Kingdom

The famous kings Devaraja and Krishnadevaraya brought great wealth to the Vijayanagar kingdom which covered areas in present day, Andhra Pradesh and Karnataka. The capital of Hampi has been recently excavated and provides evidence, that this kingdom was extremely wealthy and powerful. The Deccan plateau yields a wealth of diamond and precious stones and this benefitted the economy and the acquisition of wealth by the ruling dynasty.

Defeated by the Muslim rulers, the empire and capital at Hampi fell to ruin, its glory can now only be enjoyed from the literary and architectural remains left behind.

Chandella Rulers

Khajuraho is a small town, with the remains of some of the world's most famous temples, The kingdom, wealth and cities of the Chandellas have disappeared, only a glimpse of the great cultural activity of that period, one thousand years ago, can be seen in the temples of Khajuraho. Here, there are approximately thirty temples dedicated to Siva,Vishnu and Jain deities. The temples are characteristic of what is now called the central Indian style and its distinctive features are the high platform, on which the temple is built, the ascending arrangement of the roof, to make the whole look like a huge mountain range carrying the eye up to the height of the soaring *shikhara*. The walls of the platform, and vimana of the temple are carved with panels of sculptures of all kinds; animals in procession, scenes from court life, deities, mithuna figures and floral designs.

Eastern Gangas

In the 10th-11th century rose a new powerful dynasty of the Eastern Gangas, the most famous of whom was Narasimha Deva I who built the Surya Mandir of Konarak in Odisha. The style of architecture and sculpture of this region, was also influenced, by its contact with neighbouring areas and its historical connections. There are several tribes of Odisha that have also contributed to its artistic heritage of crafts, textiles, jewellery, costumes and customs. The main area of cultural activity with regard to temple building was around the area of Bhubaneswar, Puri and Konarak. Here one can trace the history of a temple from its smallest and simplest form to its development into a large complex of multiple shrines, reaching great heights of grandeur and beauty.

ओड़िशा के मंदिरों की उत्कृष्ट मूर्तिकला में पीला-गुलाबी बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है और इन मंदिरों की मूर्तिकला में प्रतिबिम्बित संगीत, नृत्य और साहित्य की विकसित परम्परा इस क्षेत्र को एक अद्वितीय सौंदर्यपरक विरासत प्रदान करती है।

राष्ट्रकूट साम्राज्य

राष्ट्रकूटों ने नासिक के आस-पास के उत्तरी पठार क्षेत्र पर शासन किया था। इसकी राजधानी मालखेड एक खूबसूरत और समृद्ध नगर था। राष्ट्रकूटों ने पल्लवों तथा चालुक्यों के खिलाफ संघर्ष किया ताकि वे पूरे दक्कन में अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकें। राष्ट्रकूटों के शासन काल में ही एलोरा के विश्व प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण किया गया। यह मंदिर महाराष्ट्र के एलोरा प्रदेश में पहाड़ी को ऊपर से नीचे की ओर तराश कर बनाया गया था। अजंता और एलोरा के बौद्ध-भिक्षुओं तथा जैन कारीगरों ने अपने धार्मिक समुदाय के लिए पहले से ही पहाड़ी को तराश कर विशाल आवास, कक्ष तथा प्रार्थना-गृहों का निर्माण कर लिया था। पहाड़ों को तराश कर बनाए गए ये कमरे प्रतिमाओं तथा चित्रों से सजे हुए हैं।

एलोरा स्थित कैलाशनाथ मंदिर में हमें यह उदाहरण देखने को मिलता है कि किस प्रकार मंदिरों की बनावटों की योजना दक्षिण भारत से चलकर देश के अन्य भागों तक पहुंची। पल्लवों को हराने वाले चालुक्य राजवंश के साथ राष्ट्रकूटों का राजनीतिक संबंध था। चालुक्यों ने तमिलनाडु के कैलाशनाथ मंदिर की बनावट वाले मंदिर का निर्माण राजधानी पट्टदकल में करवाया था। बाद में राष्ट्रकूटों ने भी एलोरा में मंदिर निर्माण के लिए इसी बनावट का उपयोग किया।

The delicacy of the sculpture in the Orissan temples, the use of a yellowish pink sandstone and the reflection of growing tradition of music, dance and literature in the sculpture of the temples give this area a unique aesthetic heritage.

The Rashtrakutas

The Rashtrakutas ruled in the northern Deccan region, around Nasik. The capital was at Malkhed, a beautiful and prosperous city. The Rashtrakutas had been fighting against the Pallavas and the Chalukyas so as to expand their kingdom throughout the Deccan. It was during the reign of the Rashtrakutas that the world famous Kailasanatha temple was carved out of the hill side at Ellora in Maharashtra. At Ajanta and Ellora, Buddhist and Jain artists had already cut the hill side and prepared large living quarters, halls and prayer rooms for their religious communities. These stone roofs inside the hill were decorated with sculpture and painting.

In the Kailasanatha temple at Ellora, we see an example of how ideas for temple designs travelled from south India to other parts of the country. The Rashtrakutas had political contacts with Chalukyas who in turn had defeated the Pallavas and the design of the Kailasanatha temple, in Tamil Nadu was reproduced in the Chalukyan capital at Pattadakal and later by the Rashtrakutas at Ellora.

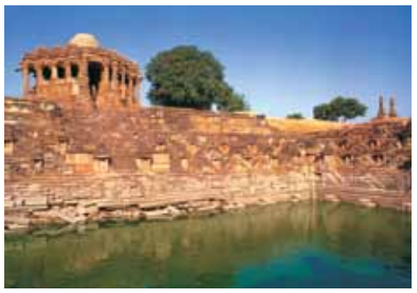

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

सूचना संग्रह

अपने प्रदेश के मध्यकालीन समय का अध्ययन करना :

- अपने प्रदेश के स्मारकों के चित्रों का संग्रह (8वीं से 16वीं सदी)।
- इस अवधि के स्मारकों, शासकों और राजाओं के बारे में रोचक सूचना-संग्रह।
- इन स्मारकों का भ्रमण करके ऐतिहासिक स्थलों के चित्र व रेखाचित्र बनाएं।

ऐतिहासिक स्थलों के चित्रों सहित इस संग्रह (पैकेट) में दिए गए चित्रों की अपने राज्य में एक प्रदर्शनी लगाएं ताकि तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।

अभिव्यंजक गतिविधियां

निम्न विष्यों पर निबंध लिखें :

- 'भारत के मध्ययुगीन काल में जीवन'
- 'मैं एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर के निर्माण में सहायता कर सकता था।'
- 'जीवन में सूर्य का महत्व' अथवा 'मेरे जीवन में एक दिन सूर्योदय नहीं हुआ, पृथ्वी रूक गई ...

  चित्र 23 में दी पांडुलिपि की तरह दृष्टांत कविता या निबंध लिखें। अपने सुंदर हस्तलेख में कविता लिखें तथा सजावटी किनारों और चित्रों सहित दृष्टांत ग्रंथ तैयार करें।

चित्रों के खाके तैयार करें

2. कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर 5. वीरूपाक्ष मंदिर 7. कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा 13. खजुराहो स्थित मंदिर 20, सूर्य मंदिर, कोणार्क और इन मंदिरों की समानताओं तथा असमानताओं का अध्ययन करें।

प्रश्नोत्तरी :

- तमिलनाडु, कर्नाटक, ओड़िशा तथा महाराष्ट्र में पत्थर को तराश कर इमारत के निर्माण में उपयोग की जाने वाली भवन निर्माणकला का उदाहरण दें?

व्याख्या करें :

- गर्भ-गृह
- शिखर
- मूर्तिकला
- प्रदक्षिणा पथ
- मण्डप

Collection of Information

Study the medieval period of your region.

— Collect pictures of monuments (8th to 16th Century C.E.) of your region.

— Collect interesting information about these monuments, rulers and kings of the period.

— Visit these monuments, make drawings and sketches of the historical sites.

Prepare an exhibition with pictures given in this package along with pictures of historical sites in your State so that a comparative study can be made.

Expressive activities

Write an imaginative essay on the following topics :

'Life in medieval India'

'I helped to build the Kailasanatha Temple at Ellora.'

'The sun in my life.' or 'One day the sun did not rise, the earth stopped' ...

Prepare an illustrated Poem or Essay like the manuscript given in picture 23. Write the poem in your best handwriting and illustrate the text with pictures and decorative borders. Draw pictures of the Kailasanatha Temple, Kanchipuram. (2) Virupaksha Temple (6) Kailasanatha Temple, Ellora (7) Temples at Khajuraho (13) Surya Mandir (20). Study their similarities and differences.

Quiz : Some sample Questions.

Name examples of rock cut architecture in Tamilnadu, Karnataka, Odisha and Maharashtra.

Define :

— Garbha-Griha

— Shikhara

— Sculpture

— Pradakshina Patha

— Mandapa

निम्नलिखित का निर्माण किसने करवाया ?

– सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा
– बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर, तमिलनाडु
– सूर्य मंदिर मोदेरा गुजरात

कौन से राज्य में हमें ये देखने को मिलते हैं ?

– विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी
– खजुराहो के मंदिर
– सूर्य मंदिर, कोणार्क
– कांचीपुरम की पल्लव राजधानी
– अजंता और एलोरा
– एहोले, बादामी और पट्टदकल
– बेलूर और हेलीबिड के होयसाल मंदिर

कौन ज्यादा प्राचीन है ?

– महाबलिपुरम स्थित पांच रथ या कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा
– सूर्य मंदिर, कोणार्क या सूर्य मंदिर, गुजरात
– खजुराहो स्थित मंदिर या होयसाल के मंदिर

निम्नलिखित की राजधानी के नाम बताएं?

– पल्लव राजवंश
– चालुक्य राजवंश
– राष्ट्रकूट राजवंश
– चोल राजवंश
– होयसाल राजवंश

निम्नलिखित की व्याख्या करें–

– नटराज
– सोमस्कंद
– सूर्य मंदिर

Who built the following?

— The Surya Mandir, Konarak, Odisha
— Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamilnadu
— Surya Mandir, Modera, Gujarat

In which state do we find?

— Hampi, capital of the Vijayanagar Empire
— Surya Mandir, Konarak
— The Pallava capital of Kanchipuram
— Ajanta and Ellora
— Aihole, Badami and Pattadakal
— Hoysala temples of Belur and Halebid

Which is older?

— Five Rathas at Mahabalipuram or Kailasanatha temple at Ellora
— Surya Mandir, Konarak
or
— Surya Mandir, Gujarat
— Temples at Khajuraho
or
— Temples of the Hoysalas

— Name the capital of the

— Pallava Empire
— Chalukyan Empire
— Rashtrakuta Empire
— Chola Empire
— Hoysala Empire

— Explain the following :

— Nataraja
— Somaskanda
— Surya Mandir

निम्नलिखित के विशिष्ट लक्षणों का वर्णन करें

- खजुराहो स्थित मंदिर
- सूर्य मंदिर, मोदेरा
- कोणार्क
- केशव मंदिर, कर्नाटक
- मंदिरों की दक्षिण, शैली
- होयसाला शैली की भवन निर्माणकला

निम्नलिखित की व्याख्या करें

- मंदिरों को मूर्तियों की पट्टिकाओं से क्यों सजाया जाता था?
- मंदिरों का निर्माण ऊंचे चबूतरे पर क्यों किया जाता था?
- मध्ययुगीन काल में मंदिरों के शिखर बहुत लंबे क्यों होते थे?
- मंदिर की दीवारों पर नृत्यांगनाओं तथा संगीतकारों की प्रतिमाएं क्यों बनाई जाती थी?
- ताड़ के पत्ते की हस्तलिपि क्या है?
- इस काल में भारत में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण बौद्ध-स्थलों के नाम बताएं?

— Describe the characteristic features of the following:

— Temples at Khajuraho
— Surya Mandir, Modera
— Konarak
— Kesava temple, Karnataka
— South Indian style of temples
— Hoysala style of architecture

— Explain the following :

— Why are temples decorated with sculptured panels?
— Why are temples built on high platforms?
— Why are shikharas of temples so tall during the medieval period?
— Why are sculptures of dancers and musicians shown on temple walls?
— What is a palm leaf manuscript?
— Name the important Buddhist sites of India.

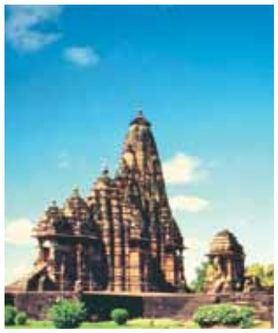

लिवान
Liwan

लिवान मस्जिद का स्तंभों वाला कमरा होता है।

The pillared cloister of a mosque is known as Liwan.

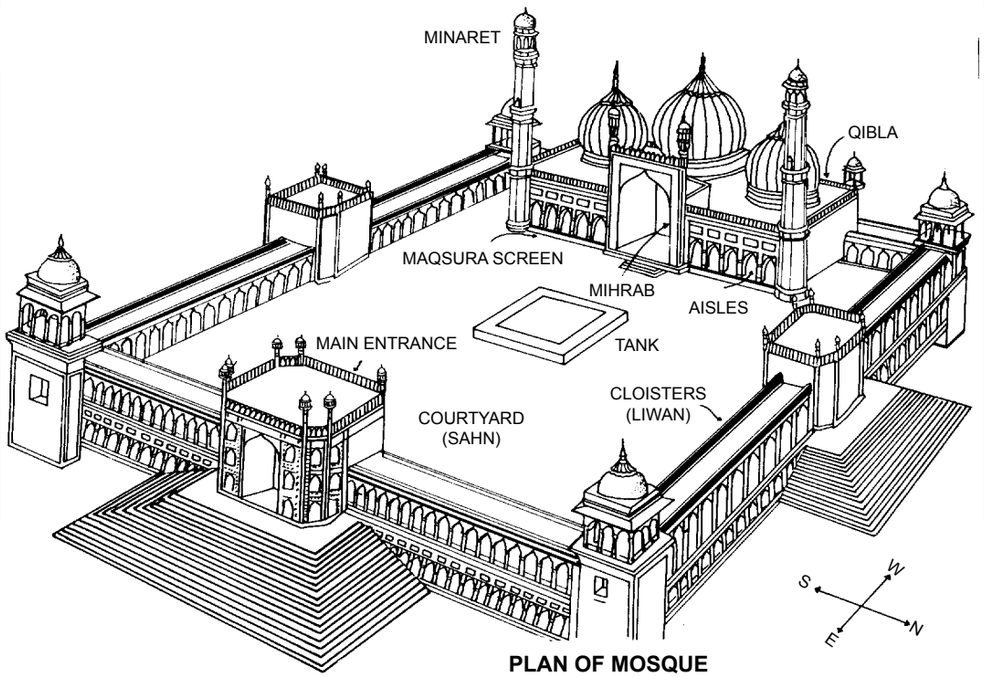

PLAN OF MOSQUE

मक़सुरा
Maqsura

मस्जिद के किबला के आखिरी सिरे को मक़सुरा कहते हैं। रेलिंग के मार्फत यह हिस्सा अलग रहता है तथा इसका उपयोग केवल शाही व्यक्ति या मौलवी ही कर सकता है।

Maqsura is a railed off area at the qibla (wall) end of a mosque. It is reserved for the chiefs of the community or rulers.

मेहराब
Mihrab

मेहराब, किबला दीवार में बने आले को कहते हैं। अमूमन यह आदमकद होता है और प्रार्थनालय की किबला दीवार में स्थापित किया जाता है और मक्का की सही दिशा दर्शाता है।

Mihrab is a niche or alcove, usually the height of a man. It is set into the qibla wall of a prayer hall and indicates the precise direction of Mecca.

सहन
Sahn

मस्जिद के प्रार्थना स्थान के सामने की खुली जगह (आंगन) को सहन कहते हैं। यहीं पर सभी लोग नमाज पढ़ने के लिए इकट्ठे होते हैं।

Sahn is the courtyard of a mosque where the faithful assemble for prayers.

किबला
Qibla

मस्जिद या प्रार्थना-स्थल की काबा (मक्का) की तरफ की दीवार को किबला कहते हैं। इसी कारण क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति की वजह से किबला की दिशा हमेशा एक-दूसरे से अलग रहती है।

Qibla is the wall of the mosque or prayer hall oriented towards the Kaaba of Mecca. It is therefore, varying in direction according to the geographical region.

चांसेल
Chancel

चर्च में मुख्य वेदी के पास के स्थान को चांसेल कहते हैं। यह पादरियों एवं वृन्द गान समूह के लिए नियत रहता है। अमूमन यह स्थान जाली के माध्यम से शेष भवनों से विभक्त किया जाता है।

In a church near the altar, the space which is reserved for the clergy and choir, set off from the nave steps, and occasionally screened off is known as Chancel.

वेदी खंड
Altarpiece

चर्च की मुख्य वेदी की पिछली तरफ किंतु कुछ ऊपर वेदी खंड होता है। यह या तो चित्रित होता है और या फिर उत्कीर्ण। इस का चूलदार पंखों वाला एक फलक होता है या तीन फलक। इसके दोनों पार्श्व चित्रित होते हैं।

An Altarpiece is a painted or carved work of art placed behind and above the altar of a church. It may be a single panel, three panels or polytych having hinged wings. Both its sides are usually painted.

प्रार्थनालय
Chapel

चर्च के उस कक्ष को प्रार्थनालय कहते हैं जिसमें संत को समर्पित वेदी रहती है।

The Chapel is a compartment in a church containing an altar dedicated to a saint.

बेलफ्राई
Belfry

चर्च के घंटे वाली मीनार को बेलफ्राई कहते हैं।

The Belfry is a tower for the church bell.

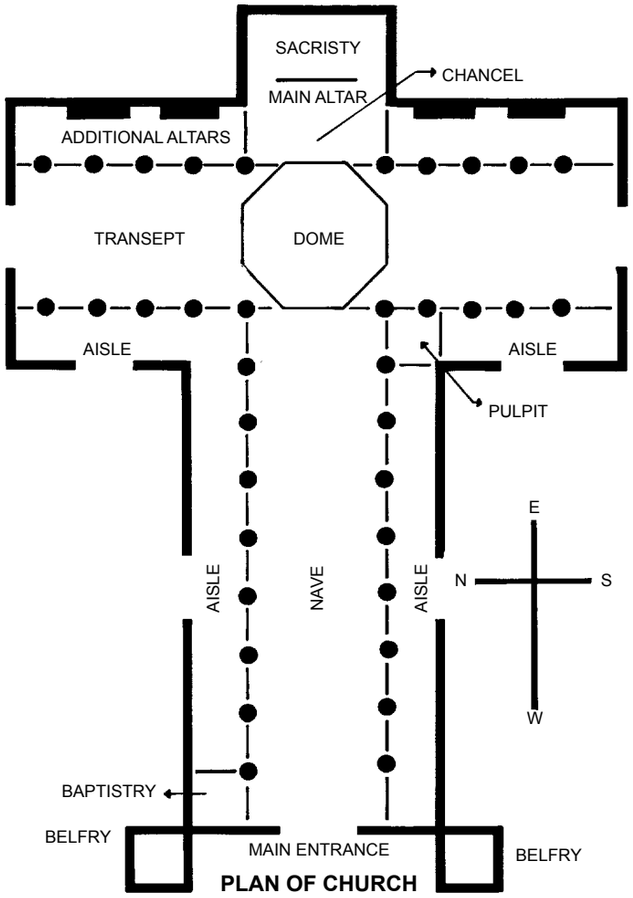

PLAN OF CHURCH

गलियारा
Aisle

चर्च के मध्य एवं अनुप्रस्थ भाग के बराबर वाले भाग को गलियारा या पार्श्ववीथी कहते हैं। यह स्तंभों के माध्यम से इनसे अलग रहता है।

As Aisle is a section of a church alongside the nave and transept and is separated from these by rows of columns.

ट्रांसेप्ट
Transept

क्रूसाकार चर्च में मुख्य आले तथा चांसेल के मध्य भाग को ट्रांसेप्ट कहते हैं। इसका डिजाइन बहुत ही सुव्यवस्थित होता है।

The Transept is a well-designed part in a cross-shaped church. In the design, it is an arm forming a right angle with the nave, usually inserted between the nave and the chancel.

सैकरिस्टि
Sacristy

चांसेल के समीप के कक्ष को सैकरिस्टि कहते हैं। यहां पादरी के पवित्र परिधान रखे रहते हैं तथा पादरी यहीं पवित्र परिधनों को धारण करते हैं।

The Sacristy is a room near the chancel where sacred vestments are kept. The priests wear these ceremonial robes in this room.

बसिलिका
Basilica

रोमन काल में बसिलिका से तात्पर्य एक विशाल सम्मेलन कक्ष से होता है। प्रारंभिक ईसाईयों द्वारा अपने चर्चों के लिए भी यह शब्द इस्तेमाल किया जाता था। विशेष दर्जा रखने वाले महत्वपूर्ण कैथोलिक चर्चों के लिए भी यह शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

In the Roman period, the word refers to the function of the building—a large meeting hall—rather than to its form which may vary according to its use. The term was used by the early Christian to refer to their churches. The term is also used for important Catholic churches enjoying special status.

दीक्षा कक्ष
Baptistery

चर्च का कोई भाग या उसके साथ का कोई भवन दीक्षा कक्ष हो सकता है। प्राय: यह वृत्ताकार या अष्टकोणीय होता है। इसमें दीक्षा की शपथ दी जाती है। यहां दीक्षा-स्थल तथा पत्थर या धातु का बना एक पात्र होता है जिसमें धार्मिक कार्यों हेतु पवित्र जल रखा जाता है।

The Baptistery may be a building or part of a church. Usually this place is round or octagonal in shape. The sacrament of baptism is administered here. It contains a baptismal font, a receptacle of stone or metal that holds the water for the rite.

वेदिका
Vedika

पवित्र स्थल या वस्तु की पवित्रता बनाए रखने हेतु उसके चारों ओर निर्मित सतह से जरा ऊंचे घेरे या रेलिंग को वेदिका कहते हैं।

A railing or fence protecting a sacred structure or a spot or object of veneration is known as Vedika.

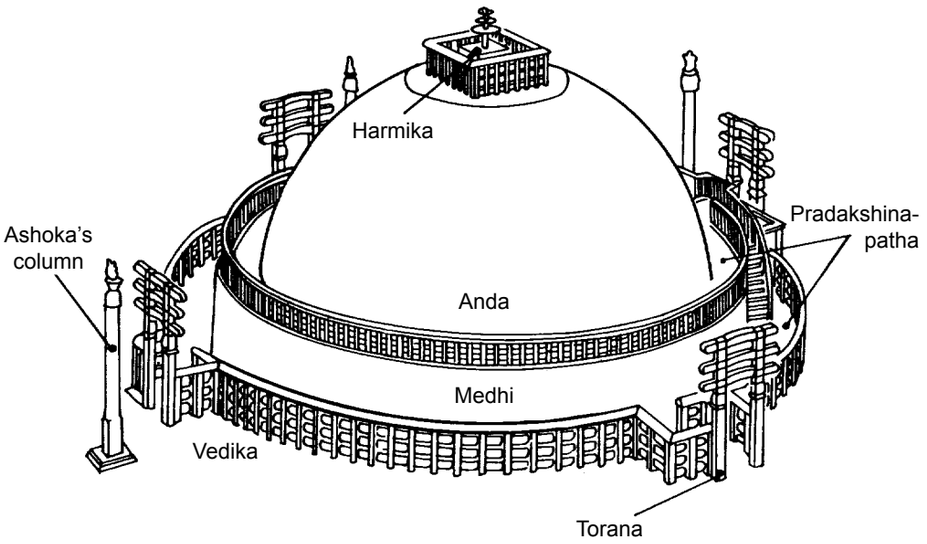

PLAN OF STUPA

मेधि
Medhi

स्तूप के चारों तरफ के ऊंचे उठे पथ (पटरी) को मेधि कहते हैं। इसे स्तूप की प्रदक्षिणा के लिए उपयोग में लाया जाता है।

The berm of a stupa is known as Medhi. The berm (medhi) level of the stupa is used for circumambulation.

हर्मिका
Harmika

स्तूप के अंड भाग के शीर्ष की चौकोर रेलिंग (घेरे) को हर्मिका कहते हैं। यह स्तूप के एक महत्वपूर्ण भाग यष्टि को घेरे रहती है।

The square superstructure in the form of a railing on top of the dome of stupa is known as Harmika. It encloses the pole Yasti, an important part of the stupa.

प्रदक्षिणा पथ
Pradakshinapatha

मंदिर या पूजा स्थल के चारों तरफ बने सामान्य सतह से ऊंचे पथ को प्रदक्षिणा पथ कहते हैं। श्रद्धालुगण इस पथ पर घड़ी के अनुरूप बायीं दिशा से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं।

A path used for clockwise circumambulation surrounding an image, shrine or building is known as Pradakshinapatha.

तोरण
Torana

तोरण मूलत: प्रवेशद्वार होता है। इसके दो उर्ध्वाधर स्तंभों पर तीन आड़े प्रस्तर पाद आधारित होते हैं। इन स्तंभों के बीच से निकल कर श्रद्धालुगण स्तूप में प्रवेश करते हैं। इसकी दोनों तरफ वन्य एवं वनस्पति जगत के सजावटी प्रतीक उत्कीर्ण किए जाते हैं। साथ ही भवन निर्माण की बारीकियां भी होती हैं।

The Torana is basically a gateway. It consists of two upright pillars supporting three architraves that makes an entry space through which the devotee gains an access to the stupa. Both its sides are carved with the decorative motifs of figures, animals, plant life and architectural details.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

1. पांच रथ, महाबलिपुरम, तमिलनाडु

पल्लवों का बंदरगाह नगर महाबलिपुरम, चैन्नइ से 55 मिलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित है तथा छठीं एवं सातवीं शताब्दी में एकाश्म चट्टानों को तराश कर बनाई गई कलाकृतियों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

पल्लवों ने दक्षिण भारत में अपने शासनकाल के दौरान अपने पूरे साम्राज्य में बड़ी संख्या में मंदिर बनवाए। उनके काल के पूर्वार्द्ध में मुख्यत: तराश कर और उतरार्द्ध में निर्मित भवनों को बनवाया गया।

महाबलिपुरम में अनेक एकाश्म स्मारक हैं। उनमें समुद्र तट के निकट के धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, द्रौपदी रथ और नकुल-सहदेव रथ, जिन्हें पंच पांडव रथ कहा जाता है, भी शामिल हैं। संभवत: इनका मामला प्रथम के शासनकाल में उत्कीर्णन हुआ। इन मंदिरों में बहुमंजलीय भवनों की निर्माण कला तथा विभिन्न रूपों की छतों को देखा जा सकता है।

वैसे यह एक रोचक तथ्य है कि कुछ भवनों की छत गांवों में थाप कर बनाए गए घरों की छतों के अनुरूप है।

1. Five Rathas, Mahabalipuram, Tamil Nadu

Mahabalipuram, the port city of the Pallavas situated about 55 kms. south of Chennai is famous for its rock cut monoliths belonging to the 7th century C.E.

During their rule in South India, the Pallavas constructed a large number of temples throughout their kingdom. The early phase of architectural activity of the Pallavan rule mainly consisted of rock cut monuments and the later phase is known for structural buildings.

There are many free standing monolithic buildings scattered in Mahabalipuram of which the five *rathas* near the sea popularly known as the '*Panch Pandava Rathas*' are Dharmaraja ratha, Bhima ratha, Arjuna ratha, Draupadi ratha and Nakula Sahadeva ratha. These were probably carved out during the reign of Mamalla I. One sees the beginning of an elaborate style of temple architecture of several storeys and having a variety of roof styles.

It is interesting to note that some of the roofs closely resemble the thatched roof of village homes.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

2. कैलाशनाथ मंदिर, काँचीपुरम, तमिलनाडु

काँचीपुरम अनेक पल्लव स्मारकों से जड़ित है। इनमें सबसे प्रसिद्ध है–कैलाशनाथ मंदिर। इसके पूर्व में नंदी मंडप है और मंदिर में प्रदक्षिणा करने के लिए प्रदक्षिणा पथ है जिसमें बहुत से लघु कक्ष हैं।

मंदिर को राजसिंहेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा हो सकता है कि यह नाम उसके किसी एक शिलालेख के अनुच्छेद से प्राप्त हुआ हो, जिसमें कहा गया है कि कैलाशनाथ मंदिर का शिखर आकाश को छूता है एवं कैलाश पर्वत की सुन्दरता का हरण करता है।

मंदिर के आधार में एक शिल्प पट्टिका है जिसमें गणों सहित अन्य जीव दर्शाए गए हैं जो कारीगरों की दक्षता को प्रदर्शित करते हैं।

मंदिर का अध्ययन करते हुए हमें सोमस्कन्द सहित पूर्व–पल्लव वंश की कला की एक विषय-वस्तु का भी आगमन दिखाई देता है।

2. Kailasanatha Temple, Kanchipuram, Tamil Nadu

Kanchipuram is studded with Pallava monuments, the most famous of which is the Kailasanatha Temple. Facing its Nandi mandapa in the East, the temple has a circumbulatory passage, containing a number of cells.

This temple is also known as Rajasimhesvara a name that may have arisen from a verse in one of its inscription, which states that the *shikara* of the Kailasanatha temple meets the sky and robs the beauty of mount Kailasa.

A panel at the base of the temple, consists of sculptured *ganas* alongwith other creatures showing the dexterity of the artisans.

While studying the temple, one finds that the emergence of the pre-Pallavan theme of showing *Somaskanda.*

3. नटराज, कैलाशनाथ मंदिर, कांचीपुरम्, तमिलनाडु

कैलाशनाथ के मंदिरों की दीवारें किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं की घटनाओं को दर्शाने वाली मूर्तियों से प्रचुर रूप से उत्कीर्ण हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा इसमें सेवकों सहित भगवान शिव को दर्शाने वाली अनेक कलाकृतियां हैं। यह मान्यता है कि भगवान शिव ने अपने अलौकिक नृत्य के द्वारा इस ब्रह्माण्ड की रचना की थी। एक बार उन्होंने अपनी पत्नी पार्वती को नृत्य की चुनौती दी थी। इस मूर्ति-शिल्प में भगवान शिव अपने वाहन नंदी तथा सेवकों के साथ नृत्य करते दर्शाए गए हैं। इस मूर्ति में उन्होंने नटों की भांति अपना एक पैर अपने कंधों के ऊपर तक उठाया हुआ है। चूंकि यह मुद्रा स्त्रियों के लिए सम्मानीय नहीं थी इसीलिए पार्वती ने इस मुद्रा का अनुसरण करने का प्रयत्न ही नहीं किया।

3. Nataraja, Kailasanatha Temple, Kanchipuram, Tamil Nadu

The walls of the Kailasanatha temple are profusely carved with panels of sculptures depicting episodes from stories of myths and legends. The Kailasanatha temple is dedicated to Siva, and has many sculptures of Siva and his attendants. Siva is said to have created the universe through his cosmic dance. Siva also challenged Parvati, his wife to a dance competition. In this sculpture, Siva is dancing along with Nandi, his *vahana* and other attendants. He has lifted one leg high above his shoulder in an acrobatic pose, this was the pose which Parvati, did not want to attempt as it was not a graceful posture for a woman.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

4. नटराज, बादामी, कर्नाटक

चट्टानों को तक्षित कर निर्मित वास्तुनिर्माण के नमूने तमिलनाडु के महाबलिपुरम् (छठी से आठवीं शताब्दी), महाराष्ट्र के अजंता और एलोरा (दूसरी से नौवीं शताब्दी), ओड़िशा के उदयगिरी में (सामान्य काल से पूर्व दूसरी शताब्दी से सामान्य काल् पाँचवीं शताब्दी) तथा कर्नाटक के बादामी और एहोले में (छठी से आठवीं शताब्दी) में दृष्टिगत हैं। बादामी की प्राकृतिक पहाड़ियों में स्तंभों युक्त सुंदर भवन या मंडप तथा आदमकद मूर्तिया तराशी गई हैं। प्रस्तुत चित्र में दर्शाई गई भगवान नटराज की यह आकृति उस युग में प्रचलित मूर्तिकला शैली का उदाहरण है। इसमें हाथ तथा पैरों की विशेष स्थिति को दर्शा कर नाटकीयता पैदा की गई है। अट्ठारह भुजाओं वाले भगवान शिव गणेशजी के साथ, अवनद्ध (ढोल, आदि) वाद्यों की संगति में नृत्य कर रहे हैं। पृष्ठभूमि में उनका वाहन नंदी भी दिखलाइ पड़ रहा है।

4. Nataraja, Badami, Karnataka

Rock cut architecture is found at Mahabalipuram in Tamil Nadu (6th to 8th century C.E.), in Ajanta and Ellora in Maharashtra (2nd to 9th century C.E.), at Udaigiri in Odisha, (2nd century B.C.E. to 5th century C.E.), and in Badami and Aihole in Karnataka (6th to 8th century C.E.). In the natural hill side at Badami, beautiful halls or *mandapas* have been carved with pillars and life size sculptures. The Nataraja shown in this picture is an excellent example of high quality sculptural skills that were prevalent during this period. The dramatic quality of this work is achieved by the position of the arms and feet. Siva with eighteen arms is shown dancing accompanied by Ganesh and a drum player. Nandi is seen in the background.

5. आम दृश्य, मंदिर समूह, पट्टदकल, कर्नाटक

पट्टदकल चालुक्य वंश की पूर्व राजधानियों बादामी तथा एहोले के पश्चात् तीसरी राजधानी था तथा यह बादामी से सोलह किलोमीटर दूर है। यह मालप्रभा नदी के तट पर स्थित है। यह नगर प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है तथा राजा विजयादित्य एवं विक्रमादित्य के शासनकाल में यह साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। यहां की वास्तुनिर्माण कला शैली आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विकसित हुई थी।

पट्टदकल में नागर तथा द्रविड़ शैलियों में निर्मित मंदिरों को देखा जा सकता है। इनकी वास्तुनिर्माण कला का गहराई से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि दोनों शैलियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया था।

मुख्य मंदिर के पूर्व में स्थित जैन मंदिर का संबंध राष्ट्रकूट काल से जोड़ा जाता है।

5. General View, Group of Temples, Pattadakal, Karnataka

Pattadakal, the third of the Chalukyan capital seat after Aihole and Badami is about sixteen kilometres from Badami. It is located on the banks of Malaprabha river. Pattadakal is known for its beautiful early western Chalukyan temples. The kingdom reached its zenith under the rule of Vijayaditya and Vikramaditya. The style of architecture of Pattadakal evolved in the first half of the eighth century.

At Pattadakal, the two styles of temples—*nagara* and *dravida* can be seen. While studying the architectural details, one finds that both the styles have influenced one another.

The Jain Temple to the east of the main temple site has been associated with the Rashtrakutas period.

6. वीरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

भगवान शिव को समर्पित वीरूपाक्ष का यह मंदिर द्रविड़ शैली में बनाया गया है। चालुक्य राजाओं ने पल्लवों पर विजय प्राप्त कर यह आदेश दिया था कि तमिलनाडु के कांचीपुरम् में स्थित कैलाशनाथ मंदिर की नकल पर वीरूपाक्ष मंदिर बनाया जाए। इस मंदिर में भी विशिष्ट क्षितिजिय स्तरों वाला शिखर, दीवारों पर मूर्ति फलक और उत्कीर्ण स्तंभों वाला मंडप है। यह सारा परिसर एक दीवार से घिरा हुआ है तथा प्रवेश द्वार पर एक छोटा सा गोपुरम है।

6. Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

The Virupaksha Temple built in the Dravidian style was dedicated to Lord Siva. The Chalukyan kings who had conquered the Pallavas wanted the Virupaksha Temple to be built on the lines of Kailasanatha Temple of Kanchipuram, Tamil Nadu. This temple also has *shikara* of distinct horizontal levels, sculptured panels on the walls and a *mandapa* of carved pillars. The entire complex is surrounded by a boundary wall and a small *gopuram* at the entrance.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

7. कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, महाराष्ट्र

आठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य राजाओं को पराजित कर दक्खन पर विजय प्राप्त की थी। वैसे तो यहां पर ऐसे अनेक स्थान हैं जहां राष्ट्रकूटों की कला को देखा जा सकता है पर मुख्य स्थान है–एलोरा। यहां उस काल की भवन निर्माण कला एवं वास्तुकला की विशिष्टताओं के भव्य समन्वित रूप में कृष्ण (प्रथम) द्वारा चट्टानों को काट कर बनवाया गया कैलाशनाथ मंदिर स्थित है। आम परिपाटी के विपरीत इस मंदिर का निर्माण कार्य इसकी चोटी से शुरू किया गया था। वास्तुकारों ने अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक कार्य योजना बनाकर चट्टानों को तराशा था। इसके गर्भगृह के प्रवेशद्वार के दोनों तरफ गंगा तथा यमुना की बड़ी आकृतियां थीं। अब वे मस्तकविहीन हैं।

यह कैलाशनाथ मंदिर अपने डिज़ाइन के कारण तमिलनाडु के कांचीपुरम् के कैलाशनाथ मंदिर तथा कर्नाटक के वीरूपाक्ष मंदिर से काफी साम्यता रखता है, पर उनकी तुलना में इसका आकार बड़ा है।

7. Kailasanatha Temple, Ellora, Maharashtra

The Rashtrakutas conquered the Deccan from the early Western Chalukyas in the 8th century. There are many sites at which the art of the Rashtrakutas can be seen, but the principal site associated with them is at Ellora. Here is one of the greatest combinations of architectural and engineering feats of that bygone era—the rock cut temple which was built under Krishna I, known as the Kailasanatha temple. In this temple, the architect began work from the top and the sides unlike the structural temples which are built up from the foundation at the ground level. The architect envisaged the plain in miinute detail and then cut away the rock piece by piece, removing exactly what was not required in his design. The entrance to the *garbhgriha* of the Kailasanatha temple is flanked by large figures, now headless, of the river goddesses Ganga and Yamuna.

Though the Kailasanatha temple at Ellora is bigger in size but the design is similar to the Kailasanatha temple at Kanchipuram in Tamil Nadu and the Virupaksha temple in Karnataka.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

8. नटराज, कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, महाराष्ट्र

आठवीं शताब्दी का यह मूर्ति फलक अपने सेवकों से घिरे संगीत की संगति में नृत्य करते भगवान शिव को दर्शा रहा है। उनकी नृत्य मुद्रा, हाथ और पैरों की स्थिति ठीक कुछ वैसी ही है जैसी कि कुछ वर्तमान नृत्य–शैलियों में होती है। वैसे इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि इस पाषाण की मूर्ति पर प्लस्तर और रंग किया गया था। यह संपूर्ण मूर्ति एक आले में स्थित है जिसके चारों तरफ पुष्प और पुष्प मालाएं उत्कीर्ण हैं।

8. Nataraja, Kailasanatha Temple, Ellora, Maharashtra

This 8th century A.D. sculptured panel depicts Siva dancing to the accompaniment of music surrounded by many attendants. The dance pose, the position of the feet and arms are similar to those seen in certain dance forms of today. There is some evidence that this stone sculpture was painted with plaster and colours. The entire sculpture is in a niche which has a carved frame of flowers and garlands.

சிவ சிவ

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

9. वृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर, तमिलनाडु

दसवीं शताब्दी ईस्वी में चोलों ने पल्लवों पर विजय प्राप्त की। भारतीय इतिहास में चोल-काल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियों का उल्लेख प्राप्त होता है, क्योंकि प्रसिद्ध चोल कांस्य शिल्प कृतियों को भारतीय कला की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में जाना जाता है।

तंजावुर स्थित वृहदेश्वर मंदिर एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोल स्मारक है। इस मंदिर को शिव-महिमा के कारण वृहदेश्वर कहा जाता है। इसे ''राजाओं के राजा'' राजराजा प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया। स्वयं राजा ने राजतिलक के समय अपना नाम इसी प्रकार घोषित किया था।

मंदिर की वास्तुकला-योजना अत्यंत साधारण-सी है। प्रसाद, मंडप, नंदी और गोपुरम् पूर्व-पश्चिम अक्षांश के ठीक ऊपर अवस्थित हैं। मंदिर का सर्वाधिक प्रभावकारी पहलू है-उसका विमान। यह साठ मीटर ऊंचा है और निर्माण के समय शायद यह एशिया की सबसे ऊँची वास्तुकला-संरचना रही होगी। विमान के ऊपर अवस्थित विशाल शिखर का वजन अस्सी टन से भी अधिक होगा, ऐसा माना जाता है। चित्र (आन्तरिक चित्र) में हम शिखर की चौदह अवरोहात्मक मंज़िलें देख सकते हैं। विमान के दोनों ओर बैठे हुए अग्रोन्मुख शीर्ष वाले नंदी हमें महाबलीपुरम् में नंदी के प्रतिरूप की याद दिलाते प्रतीत होते हैं। तीर्थ मंदिर में स्थापित लिंग मंदिर के ही समान, आकार में विशाल हैं। विमान के चबूतरे पर स्थित कुछ शिलालेख चोल-काल के दौरान जीवन-शैली का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

इस मंदिर को स्वयं राजराजा-प्रथम के नाम के आधार पर ''राजराजेश्वर मंदिर'' अथवा ''महान मंदिर'' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि उस समय शैव मंदिरों में स्थापित लिंग का नाम, प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा राजा या संरक्षक के नाम पर रखने की परंपरा प्रचलित थी।

9. Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

The Cholas succeeded the Pallavas in the 10th century C.E. In Indian history, the Chola periods is seen as one of considerable artistic achievements, the famous Chola bronze sculptures are considered master-pieces of Indian Art.

The Brihadesvara temple at Thanjavur is the most important Chola monument. The temple is called the Brihadesvara in reference to Siva's greatness. It was built by Rajaraja I "King of Kings", as he announced himself on his coronation.

The plan of the great temple is a very simple one. *Prasad Mandapa, Nandi* and the two *gopurams* are all exactly aligned on the east-west axis. The most impressive aspect of the temple is its *vimana,* which reaches to a height of sixty metres and may have been the tallest structure in South Asia at the time it was built. The huge *shikhara* atop the *vimana* is believed to weigh more than eighty tons. In the picture (inset), one sees the fourteen diminishing tiers of the *shikhara.* The Nandis on the *vimana,* seated sideways but with their heads turned to the front, remind us of their counterparts at Mahabalipuram. The *ling* enshrined in the sanctuary is colossal in size, like the temple itself. There are several inscriptions on the platform of the *vimana* giving details of life during the Chola period.

The temple is also known as the 'Great Temple' or the 'Rajarajesvara Temple' named after Rajaraja I himself. It was a common practice to name the *linga* enshrined in the Saivite temple after a famous individual, King or patron.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

10. सोमस्कन्द, राजकीय संग्रहालय, चेन्नई

पल्लव और चोल काल के दौरान बड़े-बड़े मंदिरों और सुंदर पाषाण मूर्तियों के साथ-साथ उच्च-कोटि की कांस्य प्रतिमाएं भी निर्मित हुई थीं। इन कांस्य प्रतिमाओं को बनाने के लिए कारीगर पहले मोम का एक ढांचा बनाते थे और फिर उस ढांचे या आकृति पर मिट्टी की परतें चढ़ा दी जाती थीं। सूखने पर ढांचे की पेंदी में छेद करके उसे गर्म किया जाता था जिसमें अंदर की सारी मोम पिघल कर निकल जाती थी। इसके पश्चात् उस ढांचे में पिघली धातु भर कर ठंडा होने दिया जाता था। ठंडा होने पर मिट्टी की परत उतार कर उस आकृति को संवार कर पॉलिश की जाती थी। प्रस्तुत चित्र में भगवान शिव और पार्वती को बैठी मुद्रा में दर्शाया गया है। उनके बीच में पहले कार्तिकेय या स्कंद की मूर्ति भी थी, पर आज वह गुम हो गई है। ध्यान से देखने योग्य बात यह है कि धातु किस प्रकार मोम के तरल गुण को धारण कर लेती है, किस प्रकार सूक्ष्म रूप में गहनों को गढ़ा जा सकता है और वस्त्रों को सजाया जा सकता है।

10. Somaskanda, Government State Museum, Chennai

During the Pallava and Chola period, great temples and excellent stone sculptures were produced alongwith bronze sculptures of exquisite quality. To make these sculptures, the artist first prepared the model in wax with all its intricate details. The image in this picture was covered with coatings of mud which was allowed to dry. A hole was made at the base and then heated to let the wax flow out of the mould. Hot liquid metal was poured into the mould and allowed to cool. The mud covering was then removed and the metal image was given its final touches before it was polished. The image in this picture depicts Siva and his wife Parvati in a seated posture. Between them would have been the image of Kartikeya or Skanda which is now missing. Notice, how the metal retains the fluid quality of the wax, the way the garments are draped and the fine carvings of details of jewellery.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

11. सूर्य मंदिर, मोदेरा, गुजरात

सोलंकी राजवंश ने 11वीं शताब्दी ईस्वी में सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है तथा इसी प्रकार के सूर्य मंदिर ओड़िशा के कोण ार्क में तथा कश्मीर के मार्तंड में भी हैं। मंदिर के सम्मुख एक विशाल तालाब है तथा जलस्तर तक ढलुवां सीढ़ियों के द्वारा पहुंचा जा सकता है। धार्मिक अनुष्ठानों में इस जल का उपयोग किया जाता था। तालाब के पायदानों पर भी छोटे-छोटे मंदिर तथा दीपक रखने के लिए आले बने हुए हैं। यद्यपि इस मंदिर का एक भाग क्षतिग्रस्त हो गया है लेकिन फिर भी जिस विस्तृत पैमाने पर इसकी सजावट की गई थी, उसे आज भी देखा जा सकता है।

11. Surya Temple, Modera, Gujarat

The Surya Temple was built in the 11th century C.E. under the Solanki dynasty. The temple is dedicated to Surya, the Sun God, there are similar temples at Konarak in Odisha, and at Martand in Kashmir. In front of the temple is a large tank with steep steps leading down to the sacred water which is used for ritualistic ablutions. These stairs have also been decorated with small shrines and niches for placing offerings of *diyas* (lamps). A part of the temple has fallen into ruin, however, we can still see the grand scale in which the decorations were done for this temple.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

12. सूर्य की मूर्ति, सूर्य मंदिर, मोदेरा, गुजरात

भगवान सूर्य की आराधना भारतीय जीवन, विधारधारा तथा दर्शन का एक महत्वपूर्ण भाग रही है। प्रस्तुत मूर्ति-शिल्प में भगवान सूर्य को इंद्रधनुष के रंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर खड़ी मुद्रा में दर्शाया गया है। प्रतिदिन सूर्य के उदय होने पर प्रकृति में होने वाली प्रतिक्रिया को दर्शाने के प्रतीक के रूप में भगवान सूर्य के प्रत्येक कंधे पर खिले हुए कमल के विशाल फूल अंकित किए हुए हैं। भगवान सूर्य के साथ उनकी पत्नियां ऊषा एवं छाया सेवकों सहित दर्शायीं गई हैं।

12. Sculpture, Surya Mandir, Modera, Gujarat

Sun worship is an important aspect of Indian life, thought and philosophy. In this sculpture, the Sun is depicted as standing on his chariot drawn by seven horses representing the colours of the rainbow. Two large lotus flowers bloom above his shoulders representing nature's response to the appearance of the Sun in the sky every day. Here, Surya is shown accompanied by his wives, Ushas and Chhaya and his attendants.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

13. मंदिर समूह, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों की कुछ खास विशेषताएं हैं। लगभग सभी मंदिर एक ऊँचे और ठोस चबूतरे-जगती-पर बनाए गए हैं। यह चबूतरा खुले प्रदक्षिणा पथ का काम भी देता था। इनके प्रवेशद्वार वास्तु निर्माण कला एवं मूर्तिकला की बेजोड़ उपलब्धि हैं।

प्रस्तुत चित्र में आप कंदरिया महादेव के मंदिर को देख रहे हैं। इसी चबूतरे पर दाहिनी तरफ छोटा महादेव का मंदिर तथा देवी जगदंबा का मंदिर भी देख सकते हैं।

कंदरिया महादेव का मंदिर खजुराहो का भव्यतम मंदिर माना जाता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा कंदरिया का अर्थ है–कंदराओं में विचरण करने वाले भगवान शिव। मंदिर के मुख्य स्थान में संगमरमर का लिंग स्थापित है। यह पूर्वाभिमुखी है तथा प्रवेशद्वार इकहरे पत्थर से निर्मित है। दोनों ओर से पौराणिक मगरमच्छों के मस्तक पर जो माला है, वह चार फेरों में अत्यंत अलंकृत रूप में उत्कीर्ण की गई है। कंदरिया महादेव एवं देवी जगदम्बा के मंदिर के मध्य में छोटा महादेव का मंदिर स्थित है। एक सिंह तथा मंडप में एक झुकी हुई आकृति मंदिर की महत्वपूर्ण मूर्तियां हैं।

देवी जगदंबा का मंदिर मूलत: भगवान विष्णु को समर्पित था मगर बाद में देवी की एक अर्ध निर्मित मूर्ति ने इसका नाम परिवर्तित किया। मंदिर की बाहरी दीवारों पर मूर्तियों की तीन पट्टिकाएं हैं। इसी मंदिर में तीन मस्तक और अष्टभुजा वाले भगवान शिव तथा भगवान विष्णु के वराह-अवतार की ध्यानाकर्षक मूर्तियां भी हैं।

13. Group of Temples, Khajuraho, Madhya Pradesh

There are certain distinctive features of the temples at Khajuraho. Almost all have been constructed on a high and solid platform, the *jagati.* This platform provides an open ambulatory. The doorways are unique achievements of both architecture and sculpture.

In this picture, we see the Kandariya Mahadev temple sharing the platform with the small Mahadev temple and the Devi Jagadamba temple on its extreme right.

The Kandariya Mahadev temple is considered as the most magnificent temple of Khajuraho. Kandariya denotes 'Siva who dwells in a mountain cave' and the temple is dedicated to Siva. A marble *lingam* is enshrined in the main sanctum. The temple faces east and the gateway is made up of a single stone. A garland that rests on the heads of mythical crocodiles has been carved ornamentally into four loops.

The small temple of Mahadev stands between Kandariya Mahadev and Devi Jagadamba temple. A lion alongwith the kneeling figure in the *mandapa* of the temple is the most important sculpture.

The Devi Jagadamba temple was originally dedicated to Vishnu but later the unfinished image of the goddess determined its name. The temple has three bands of sculptures on the outer walls. The temple also has two interesting sculptures of the three-headed eight-armed Siva and the Varaha, incarnation of Vishnu.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

14. विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिर मध्य भारत की वास्तुकला के शताब्दियों के विकास के पश्चात् उसके चरमोत्कर्ष रूप को दर्शाते हैं। ये मंदिर चंदेल काल के निवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं। इन मंदिरों की एक अन्य खास विशेषता उनकी विशिष्ट वास्तुनिर्माण कला है। प्रायः सभी मंदिर एक ऊंचे और ठोस चबूतरे पर स्थित हैं।

विश्वनाथ मंदिर की धरातलीय एवं ऊपरी योजना कंदरिया महादेव मंदिर तथा लक्ष्मण मंदिर से मेल खाती है। प्रवेशमार्ग के साथ की तीन मूर्तिमय पट्टिकाएं खजुराहो की सुंदरतम मूर्तियां दर्शाती हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा इसमें शिवलिंग स्थापित है। इस मंदिर की छत पर अनेक दलों वाले फूल उत्कीर्ण हैं। मंदिर का मुख्य शिखर शंकु के आकार का है तथा उसके आसपास अनेक छोटे शिखर हैं जो पर्वतमाला का आभास देते हैं।

मंदिर का शिलालेख यह दर्शाता है कि राजा धंगदेव ने इसका निर्माण करवाया था और वहां एक शिला तथा पन्ना मिश्रित लिंग स्थापित किया।

14. Vishwanatha Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The Khajuraho temples represent the culmination of the central Indian style of architecture which had evolved over centuries. These temples throw light on the social, economic and religious life of the people who lived there during the time of the Chandellas. One of the most notable features of the Khajuraho temples are their distinctive style of architecture. Almost all the temples stand on a high and solid platform.

The ground and elevation plan of the temple resembles the Kandariya Mahadev and Lakshmana temples. The three broad bands of sculptures alongwith the passageway contain some of the most exquisite sculptures of Khajuraho. The Vishwanatha temple is dedicated to Siva and enshrines a *sivalinga.* There are many-petalled flowers which have been carved in the ceiling of this temple. The main *shikhara* of the temple is conical in shape and is surrounded by smaller *shikharas* giving the impression of a mountain range.

A stone slab inscription of the temple states that king Dhangadeva built this temple and had installed a stone mixed with emerald lingam.

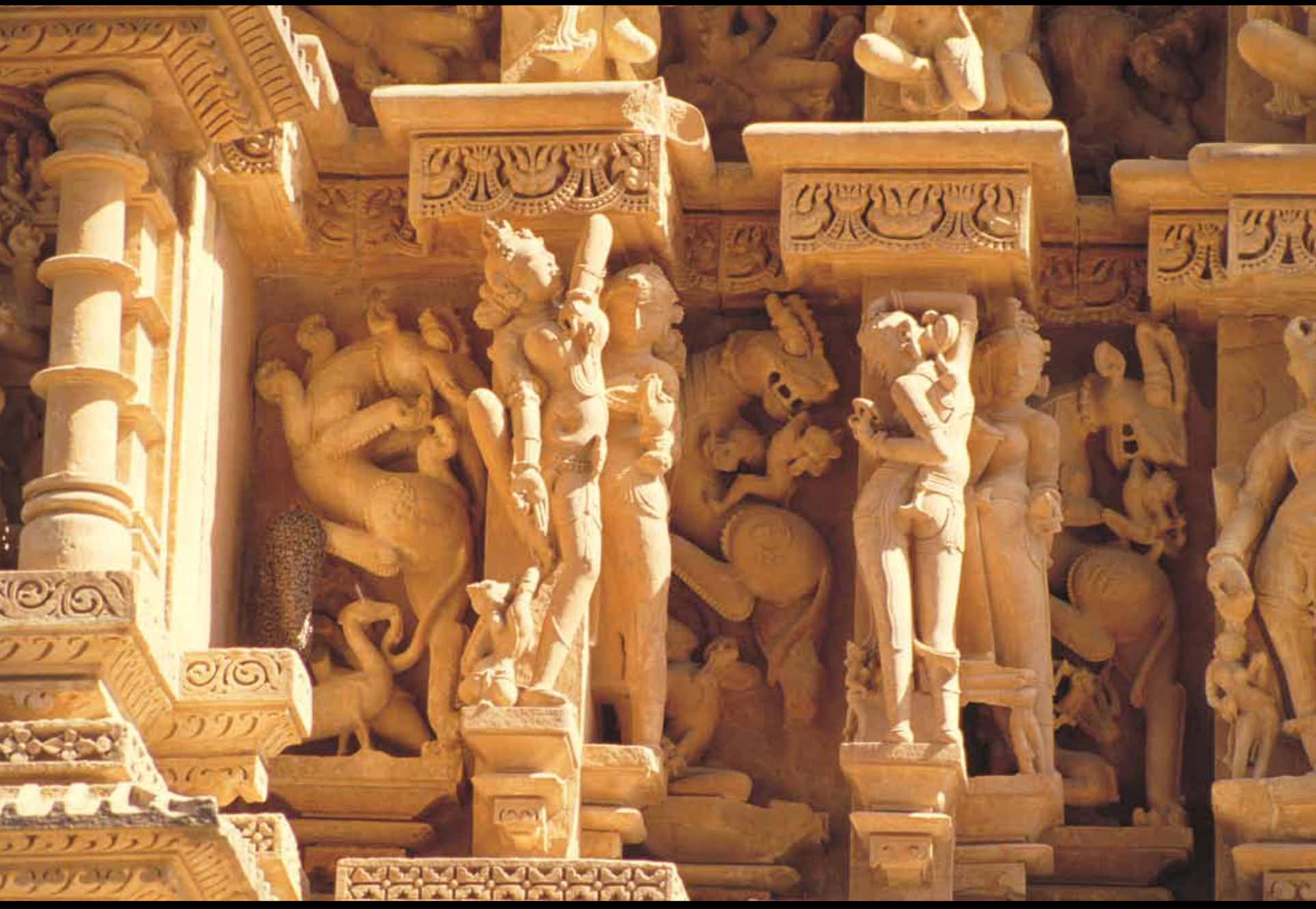

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

15. मूर्तिमय फलक, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों में वास्तुनिर्माण कला एवं मूर्तिकला अपने सुंदरतम रूप में उभरी है। मंदिरों की दीवारें आंतरिक एवं बाहरी दोनों तरफ प्रचुर रूप से उत्कीर्ण हैं। उनमें स्त्री-आकृतियों एवं प्रेमरत युगलों की प्रचुरता को देखकर विद्वान अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं।

प्रस्तुत चित्र में आप आंतरिक आलों में पौराणिक पशुओं की आकृतियों तथा नृत्य करती, वाद्ययंत्र बजाती, दर्पण में स्वयं को निहारती तथा सिंदूर, काजल और आलते से स्वयं का शृंगार करती स्त्री-आकृतियों को देख सकते हैं। इन सभी आकृतियों के परिधान बड़े ही सुंदर हैं तथा उनका अंग-प्रत्यंग आभूषणों से सुसज्जित है। ये सभी आकृतियां दीवार से उभरी हुई हैं तथा कमोबेश मुक्त अवस्था में हैं।

ग्रेनाइट तथा बलुआ पत्थर का उपयोग भवन तथा मूर्तियां बनाने के लिए किया गया है।

15. Sculpture Panels, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The art of sculpture and architecture merge most beautifully at Khajuraho. The walls of the temples are profusely carved both internally and externally. The profusion of female figures and loving couples in the main temple walls has inspired scholars to offer several theories.

In this picture, you see the mythical animals in the inner niches wheareas the female figures are seen in dance poses, playing musical instrument, looking in the mirror, adorning themselves with *sindur, kajal and alta.* All the figures are dressed in fine garments. Jewellery is worn in the hair, neck, arms, waist, ankles and feet. These figures have been sculpted protruding out of the wall—more or less free-standing.

Granite and sandstone have been used for buildings and sculptures at Khajuraho.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

16. संगीतकार, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो की मूर्तियों का भंडार वहां रहने वाले उस काल के लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करता है। वहां ऐसे अनेक मूर्तिमय फलक हैं जो घरेलू जीवन, नृत्य तथा संगीत आदि अनेक विषयों को दर्शाते हैं। इस चित्र में दर्शाए गए संगीतकारों से ज्ञात होता है कि उस काल में कैसे वाद्ययंत्र होते थे। इसी से यह भी पता चलता है कि खजुराहोवासी वर्तमान दो मुखी प्रकार की बांसुरी, मंजीरे तथा पखावज से साम्यता रखती ढोलक से परिचित थे।

16. Musicians, Khajuraho, Madhya Pradesh

The sculptural treasure of Khajuraho gives us information on the social, economic and religious life of the people of that time. There are a number of sculptural panels which have miscellaneous themes, including domestic life and scenes showing dance and music activities. This picture showing a group of musicians performing give us an idea about the musical instruments of that time. Here we can see that the people of Khajuraho were familiar with two types of flutes, cymbals and a drum similar to the contemporary horizontal two faced Pakhawaj.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

17. बाह्य दृश्य, केशव मंदिर, बेलूर, कर्नाटक

होयसाल शासकों ने कर्नाटक के मंदिरों के डिजाइन की एक अद्वितीय शैली दी जो बेलूर, हेलीबिड तथा सोमनाथपुर में देखी जा सकती है। इस क्षेत्र में पृथ्वी के धरातल की प्राचीनतम चट्टानों में से एक प्राप्त होती हैं। इन्हें धारवाड़ चट्टान कहा जाता है। यह गहरे रंग का हरियाली आभा लिए काला पत्थर होता है तथा यह इतना बेहतरीन है कि मूर्तिकार उस पर धागे जैसी महीन नक्काशी भी की जा सकती है।

होयसाल राजा विष्णुवर्धन ने अपने वास्तुकार जनक आचार्य को आदेश दिया था कि वह कर्नाटक के हासन जिले के बेलूर में भगवान चन्न केशव का मंदिर बनाए। इस मंदिर में होयसाल वास्तुनिर्माण कला की सभी विशेषताएं जैसे कि तारों के आकार के पूजा-स्थल, चबूतरा, गेंद की आकार की मीनारें तथा स्तंभयुक्त मंडप हैं। इस मंदिर के मंडप में खूबसूरत गोल पत्थर के चबूतरे हैं। समूचा मंदिर परिसर 440 × 360 फीट के विशाल आयताकार क्षेत्र में फैला है। मंदिर परिसर में पारंपरिक गोपुरम बाद में निर्मित हुए थे।

17. Exterior View, Kesava Temple, Belur, Karnataka

The Hoysala rulers gave to Karnataka, a unique temple design which is seen at Belur, Halebid and Somnathpur. In this area, are found some of the most ancient rocks of the earth's crust, called Dharwar Schist. It is a dark, greenish black stone, that gives to these temples and sculptures a particular glow, and is so closely textured and fine that almost lace-like carving was possible on this stone.

The Hoysala King Vishnuvardhan is said to have directed his architect, the legendary Janaka Acharya to build a temple to God Channa Kesava at Belur in the Hassan district of Karnataka. The temple with its star shaped shrine, platform, bell shaped towers and pillared *mandapas* has all the essentials of the Hoysala style of architecture. The *mandapa* of this temple has one of the most beautiful circular stone platforms. The entire temple is set within a vast rectangular enclosure of 440 ft. × 360 ft. The traditional *gopurams* in the temple premises were added at a later date.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

18. केशव मंदिर, सोमनाथपुर, कर्नाटक

सोमनाथपुर का केशव मंदिर वास्तुकला की होयसाल शैली का अनुपम उदाहरण है। होयसाल वंश के राजाओं एवं वासियों ने अपने पूजा स्थलों के लिए वास्तुनिर्माण की नई पद्धति विकसित की थी। समूचा मंदिर तारे की आकृति वाले चबूतरे पर निर्मित है। तारे की यह आकृति मंदिर के विमान और शिखर में भी देखी जा सकती है। मंदिर के तारों की आकृति वाले तीन शिखर हैं जो इसके तीन गर्भगृहों की ओर संकेत करते हैं जिनमें देवताओं की मूर्तियां स्थापित थीं। इसके मध्य का कक्ष तीन पवित्र कमरों से जुड़ा है जिसमें उत्कीर्ण स्तंभ एवं दीवारगीर हैं। मंदिर की बाहरी दीवारें नीचे से लेकर शिखर तक आड़ी मूर्तिमय पट्टियों से अलंकृत हैं। इन आकृतियों में पशु, पौराणिक चरित्र तथा महाभारत और रामायण के दृश्यों के साथ देवताओं की आकृतियां हैं।

18. Kesava Temple, Somnathpur, Karnataka

The Kesava temple of Somnathpur is an outstanding example of Hoysala style of architecture. The Hoysalas evolved new patterns in architecture for their places of worship. The whole temple at Somnathpur has been built on a star-shaped platform and the star shape continues through to the *vimana* and *shikhara.* There are three star shaped *shikharas* in this temple which indicate three *garbhagrihas* in which images of the Gods were installed. The central hall links the three sacred rooms and has carved pillars and brackets within them.

The exterior walls are ornamented with sculptures which begin from the ground level in horizontal bands and continue right upto the top of the *shikhara.* These sculptured borders show animals, mythological characters, scenes from the Mahabharata and Ramayana alongwith images of deities and bracket figures.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

19. मूर्ति–फलक, हेलीबिड, कर्नाटक

होयसाल मंदिर की समूची दीवार को अनेक मूर्ति-फलकों में विभाजित किया जा सकता है। दीवार के निचले भाग पर जलूस के रूप में जाते हाथियों की कतारें उत्कीर्ण हैं। इनके ऊपर अश्वों की आकृतियां तथा उनके पहले फूलों एवं लताओं को उत्कीर्ण किया हुआ है। इस कतार के ऊपर काल्पनिक जीवों, हंसों, देवी-देवताओं की विशाल सजावटी मूर्तियों की कतार है। सबसे पहले रेखागणितीय डिजाइन वाली छत है जो कि प्राचीन सुंदर काष्ठ भवन निर्माणकला का प्रतिरूप प्रतीत होती है।

नटराज, हेलीबिड, कर्नाटक

होयसाल मंदिर की विशाल मूर्तियों को एक निश्चित आकार-प्रकार (बनावट) को उत्कीर्ण किया गया है। मुख्य आकृति फूलों और लताओं के शोभायमान चंदोवे से घिरी हुई है। देवताओं की आकृतियां शास्त्र-पद्धति या शास्त्रानुसार भारी आभूषणों से अलंकृत हैं। इस मूर्ति शिल्प में भगवान शिव को अज्ञानता के दानव अपस्मार की लेटी हुई मुद्रा में तक्षित आकृति के ऊपर नृत्य करते दर्शाया गया है। उनके हर हाथ की एक विशेष नृत्य मुद्रा है। नटराज की इस मूर्ति-शिल्प की तुलना अन्य कालों और स्थानों की नटराज की मूर्ति से कर के देखिए।

19. Sculptural Panels, Halebid, Karnataka

The entire wall of the Hoysala temple can be divided into several bands of sculptures. The lowest level is occupied by a row of elephants in procession. Above them are a line of horses, then one can see floral and creeper designs. Above the creeper designs are rows and rows of mythical creatures, *hansas,* decorative sculptures of gods and goddesses and finally geometric designs of the roof that imitate beautiful older wooden forms of architecture.

Nataraja, Halebid, Karnataka

The larger sculptures of the Hoysala temple are carved in a particular style. The main figure is surrounded by an ornamental canopy of creepers and flowers. The figures of the deities are decorated with heavy jewellery. Nataraja is seen here dancing upon the fallen figure of Apasmara, the demon of ignorance. Each hand of Siva depicts a dance *mudra.* One can compare this sculpture with other Nataraja figures from different places and historical periods for similarity in symbols associated with the Nataraja.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

20. सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

वर्तमान ओड़िशा राज्य की सीमाओं में आज भी सुंदर मंदिरों की एक श्रृंखला विद्यमान है। इनसे कलिंग वंश के इतिहास का आद्योपांत ज्ञान होता है।

इस काल की वास्तु रचना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कोणार्क का सूर्य मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण नरसिंह प्रथम द्वारा 1238-58 ईस्वी के बीच करवाया गया था। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। यह सूर्य मंदिर एक बड़े चौकोर प्रांगण में स्थित है और इसका निर्माण सूर्य देव के सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले बड़े रथ के समान है।

सूर्य मंदिर की रथ के रूप में कल्पना के पीछे भारत के विभिन्न भागों में समारोहों के अवसर पर लकड़ी की गाड़ियों में देवताओं की निकाली जाने वाली शोभा यात्राओं का प्रचलन रहा होगा। भगवान सूर्य के इस रथ में बारह जोड़ी पहिए दर्शाए गए हैं जो कि वर्ष के बारह महीनों के प्रतीक हैं।

बंगाल की खाड़ी के समीप होने के कारण इस मंदिर को वातावरण की लवणता ने काफी क्षति पहुंचाई है। अब भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने इसके संरक्षण का काम अपने हाथ में लिया है।

20. Sun Temple, Konarak, Odisha

The present day territory of the state of Odisha has the prized distinction of possessing a series of beautiful temples illustrating the history of the Kalingas from its inception. The supreme achievement of the architectural genius of the period is the Sun Temple at Konarak. The temple was built by Narasimha I during 1238-58 A.D. As the name suggest, the temple is dedicated to Surya. The Sun Temple situated within the centre of a large quadrangular compound was conceived and designed in the shape of a huge chariot, the *ratha* of the Sun God drawn by seven horses. The concept of the Sun Temple as a chariot may be based on the practice prevalent in various parts of India using a large wooden cart, *ratha* for processions of deities through the city streets on festival occasions.

There are twelve pairs of wheels on the plinth of the chariot of the Sun God. These twelve pairs of wheels represent the twelve months in year.

Due to its proximity to the Bay of Bengal, the salt in the moisture has caused extensive damage to the temple. The Archaeological Survey of India, however, has taken up the monumental task of its conservation.

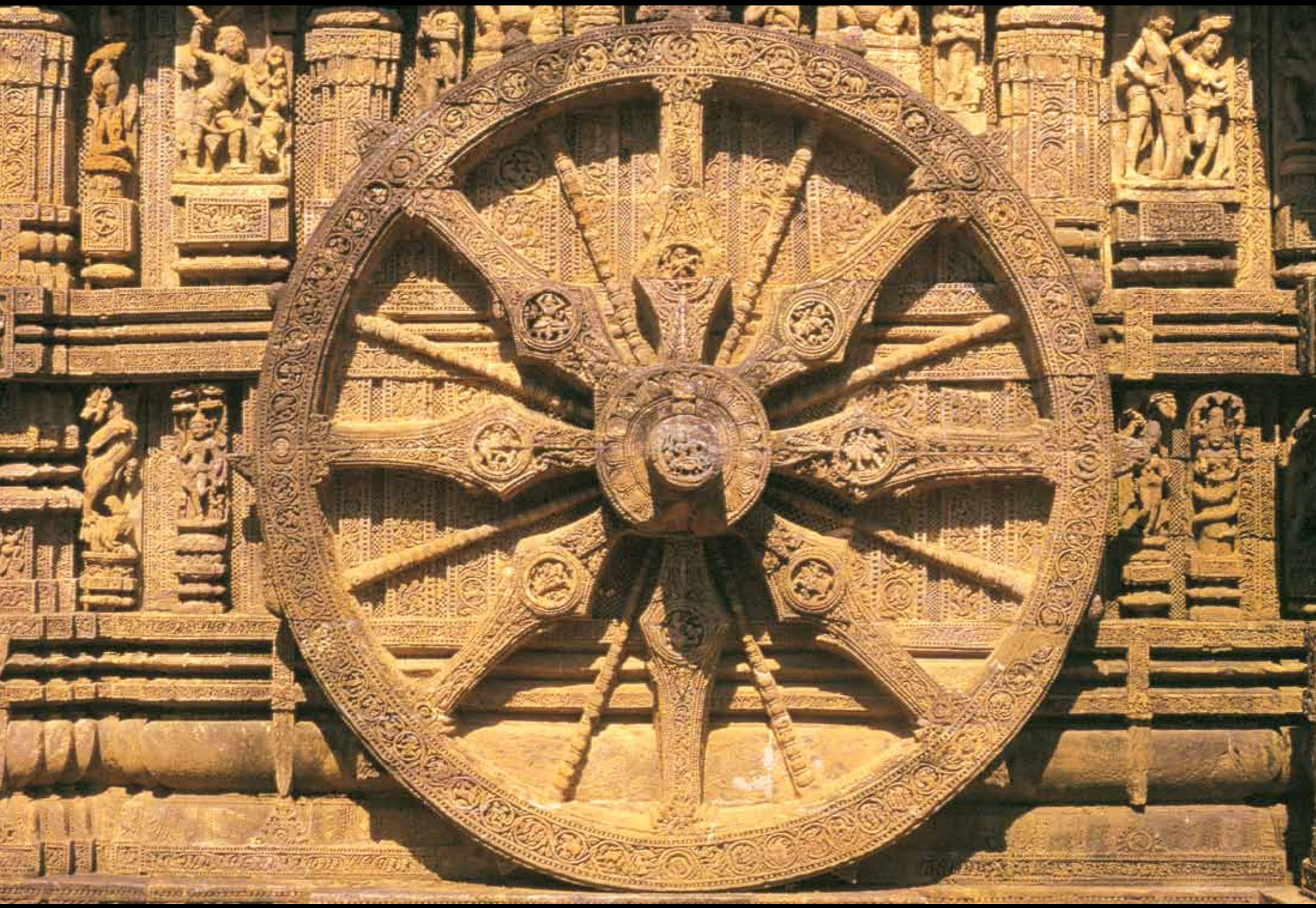

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

21. चक्र, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

सूर्य मंदिर के संपूर्ण डिजाइन की कल्पना भगवान सूर्य के दिव्य रथ के रूप में की गई थी।

इस की मंत्र-मुग्ध करने वाली आकृतियों में इसके विशालकाय चक्र हैं। हर चक्र का व्यास तीन मीटर से अधिक है तथा इसके आठ बड़े और आठ छोटे अरे हैं। धुरे सहित सभी चक्रों पर बहुत ही आकर्षक रूप से दानेदार घेरों तथा कमल की पत्तियों की पंक्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। चक्रों के नीचे की चित्रवल्लरी पर चलते हुए हाथियों के समूह को बड़ी सूक्ष्मता से उत्कीर्ण किया गया है।

21. Wheel, Sun Temple, Konarak, Odisha

The complete design of the Sun temple was conceived as the celestial chariot of Surya, the Sun God. One of the fascinating features of this temple are its gigantic wheels. Each wheel is more than three metres in diameter and has eight major and eight minor spokes. All the wheels, including its hub have been exquisitely carved with beaded rings and a row of lotus petals. A band of elephants in procession is a running freize minutely carved underneath the wheels.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

22. चित्रित फलक, नर्तक, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

कोणार्क का सूर्य मंदिर कला का अथाह भंडार है। यहां की मूर्तियां, यहां की स्थापत्यकला पर प्रभुत्व तो नहीं रखती परंतु मंदिर की सुन्दरता को बढ़ा देती हैं।

इस मंदिर की मूर्तियां क्लोराइट, लेटराइट तथा खोंडेलाइट नामक तीन प्रकार के पत्थरों से बनाई गई हैं। यह पत्थर अवश्य ही बाहर के स्थानों से यहां लाए गए होंगे क्योंकि आज इस स्थान के आस-पास इनमें से कोई भी पत्थर उपलब्ध नहीं हैं।

सूर्य मंडप के सम्मुख उठे हुए चबूतरे को नाट्य मंडप कहते हैं। समूची दीवार पर विभिन्न मुदाओं में संगीतकारों एवं नर्तकों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। इन आकृतियों से हम तेरहवीं शताब्दी में प्रचलित नृत्य-शैलियों का अध्ययन कर सकते हैं तथा उनकी वर्तमान ओड़ीसी नृत्य-शैली के साथ तुलना कर सकते हैं। कलाकार ने नर्तक की त्रिभंग की स्थिति, उसकी मुद्रा, उसके परिधान एवं आभूषणों का बड़ी कुशलता से प्रदर्शन किया है। मूर्तिकार ने सारी दीवार को आकाश में प्रतिदिन भ्रमण करते भगवान सूर्य के सम्मान में नृत्य एवं संगीत प्रस्तुत करते संगीतकारों और नर्तकों की आकृतियों से सुसज्जित किया है।

22. Sculptural Panel, Dancers, Sun Temple, Konarak, Odisha

The Sun Temple at Konarak is a treasure house of art. The sculptures in this temple do not dominate the architecture but add to the beauty of the temple.

Three kinds of stones, chlorite, laterite and khondalite have been used for the sculptures. The stone must have been brought from other places as none of these are available in the vicinity today.

In front of the Surya *mandapa* is a raised platform called the *natya mandapa.* The entire wall is carved with sculptures of musicians and dancers in various poses. From the sculptures, we can study the style of dance popular in temples of the 13th century and can compare it to the Odissi dance style of today. The artist has captured the *tribhanga* posture of the body, the *mudras,* and the costume and jewellery worn by the dancer. The artist has adorned the temple walls with figures of musicians and dancers as if they are offering dance and music to the Sun God—Surya, as he makes its journey across the sky each day.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

23. ताड़ के पत्ते पर लिखी पांडुलिपि, बिहार

मध्य काल में भवन निर्माणकला विशेषकर मंदिरों का निर्माण, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और साहित्य आदि कलाएं राज दरबार के संरक्षण में खूब विकसित हुई। भारत के सभी भागों में ताड़ के पत्ते पर उत्तम चित्रों वाली पांडुलिपियों को तैयार किया गया। कागज के निर्माण से पहले महत्वपूर्ण धार्मिक मूलग्रंथों की पांडुलिपियां ताड़ के पत्तों पर तैयार की गई। इसके लिए सबसे पहले पत्ते को सुखाकर समतल (प्रेस) किया जाता था। प्रत्येक पत्ते को मूल ग्रंथ में सचित्र तथा सुसज्जित किनारों के लिए खंडों में विभक्त किया गया। फिर, कूंचियों की सहायता से डिजाइन बनाए जाते थे। इस चित्र में बैठे दिखाई दे रहे दो बौद्ध-भिक्षु महात्मा बुद्ध की शिक्षा की व्याख्या कर रहे हैं।

23. Palm Leaf, Manuscript, Bihar

During the medieval period, sculpture, painting, music, dance and literature all blossomed under the patronage of the courts. Exquisitely illustrated manuscripts on palm leaf were produced in all parts of India. Under the Pala dynasty in eastern India, Buddhist monasteries prepared a number of manuscripts of important religious texts on palm leaf before the introduction of paper. The palm leaf was first dried and pressed. Each leaf was divided into sections for the text, the illustration and decorated borders. The designs were made with a paint brush or stylus. In this painting, we see two seated *Bodhisatvas* explaining the teachings of Buddha.

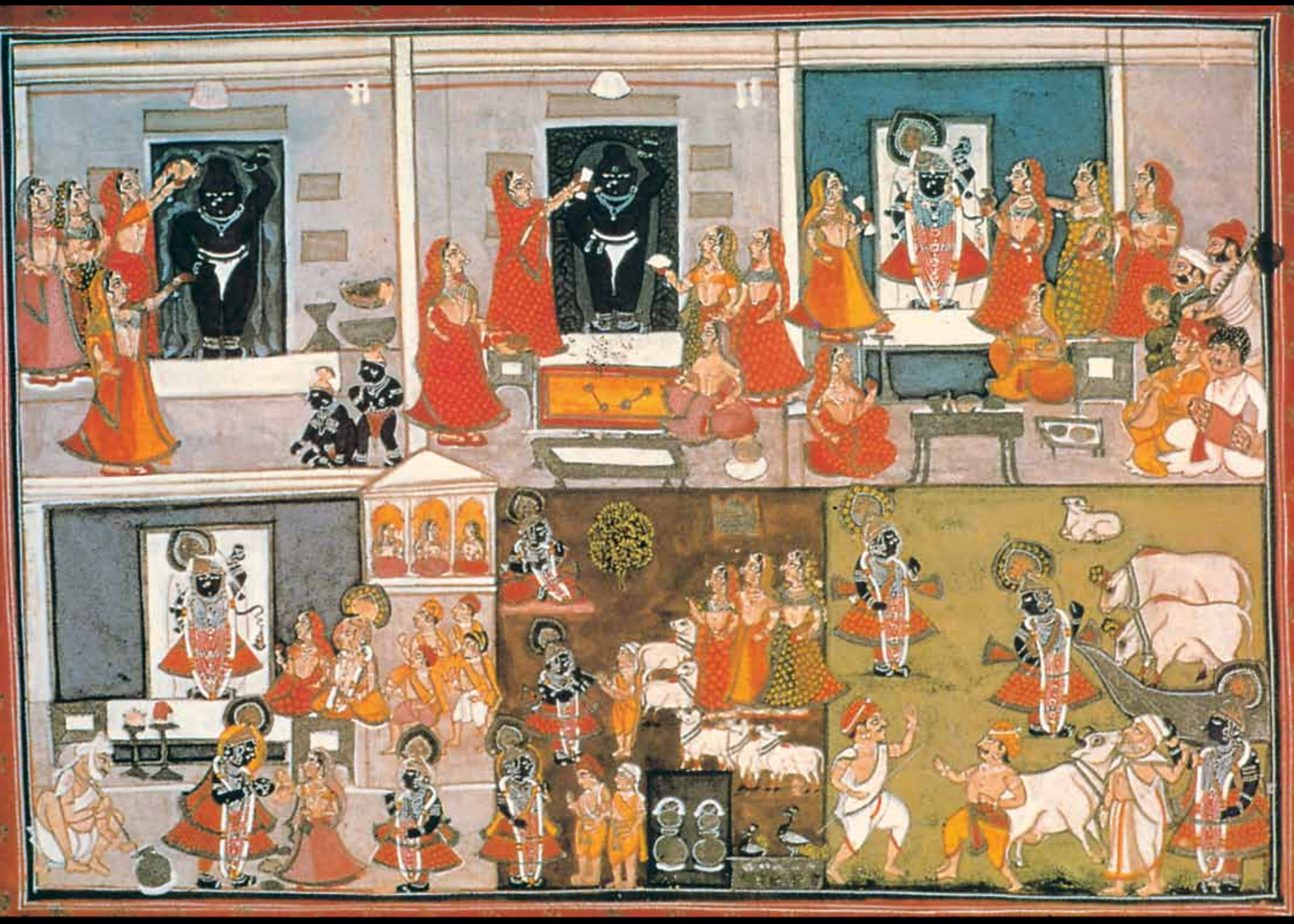

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

24. भित्तिचित्र, श्रीनाथजी की आराधना, नाथद्वारा, राजस्थान

यह प्राचीन चित्र अठ्ठारहवीं शताब्दी का है। इस भित्तिचित्र में कृष्ण की आराधना तथा मंदिर में होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों को चित्रित किया गया है। चित्र को देखकर यह जानकारी मिलती है कि फूलों, वस्त्रों तथा आभूषणों से देवताओं की मूर्तियों का किस प्रकार शृंगार किया जाता था। मध्य काल में भक्तिवाद ने अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संतों, कवियों और संगीतकारों ने देवी-देवताओं के सम्मान में भक्तिपदों की रचना की थी।

24. Painting, Worship of Srinathji, Nathdwara, Rajasthan

This painting of the 18th century C.E. illustrates the worship of Krishna and the different rituals and functions performed in the temple situated at Nathdwara near Udaipur in Rajasthan. Notice how the image is dressed in traditional garments and adorned with flowers and jewellery. During the medieval period, the *bhakti* movement was responsible for the enrichment of many modern Indian languages. Saints, poets and musicians composed and sang verses in praise of gods and goddesses.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

1. पांच रथ, महाबलिपुरम, तमिलनाडु

पल्लवों का बंदरगाह नगर महाबलिपुरम चैन्नइ से 55 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित है तथा छठीं एवं सातवीं शताब्दी में एकाश्म चट्टानों को तराश कर बनाई गई कलाकृतियों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

पल्लवों ने दक्षिण भारत ने अपने शासनकाल के दौरान अपने पूरे साम्राज्य में बड़ी संख्या में मंदिर बनवाए। उनके काल के पूर्वार्द्ध में मुख्यत: तराश कर और उतरार्द्ध में निर्मित भवनों को बनवाया गया।

महाबलिपुरम में अनेक एकाश्म स्मारक हैं। उनमें समुद्र तट के निकट के धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, द्रौपदी रथ और नकुल-सहदेव रथ, जिन्हें पंच पांडव रथ कहा जाता है, भी शामिल हैं। संभवत: इनका मामला प्रथम के शासनकाल में उत्कीर्णन हुआ। इन मंदिरों में बहुमंजलीय भवनों की निर्माण कला तथा विभिन्न रूपों की छतों को देखा जा सकता है।

वैसे यह एक रोचक तथ्य है कि कुछ भवनों की छत गांवों में थाप कर बनाए गए घरों की छतों के अनुरूप है।

2. कैलाशनाथ मंदिर, काँचीपुरम, तमिलनाडु

काँचीपुरम अनेक पल्लव स्मारकों से जड़ित है। इनमें सबसे प्रसिद्ध है–कैलाशनाथ मंदिर। इसके पूर्व में नंदी मंडप है और मंदिर में प्रदक्षिणा करने के लिए प्रदक्षिणा पथ है जिसमें बहुत से लघु कक्ष हैं।

मंदिर को राजसिंहेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा हो सकता है कि यह नाम उसके किसी एक शिलालेख के अनुच्छेद से प्राप्त हुआ हो, जिसमें कहा गया है कि कैलाशनाथ मंदिर का शिखर आकाश को छूता है एवं कैलाश पर्वत की सुन्दरता का हरण करता है।

मंदिर के आधार में एक शिल्प पट्टिका है जिसमें गणों सहित अन्य जीव दर्शाए गए हैं जो कारीगरों की दक्षता को प्रदर्शित करते हैं।

मंदिर का अध्ययन करते हुए हमें सोमस्कन्द सहित पूर्व–पल्लव वंश की कला की एक विषय-वस्तु का भी आगमन दिखाई देता है।

3. नटराज, कैलाशनाथ मंदिर, कांचीपुरम्, तमिलनाडु

कैलाशनाथ के मंदिरों की दीवारें किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं की घटनाओं को दर्शाने वाली मूर्तियों से प्रचुर रूप से उत्कीर्ण हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा इसमें सेवकों सहित भगवान शिव को दर्शाने वाली अनेक कलाकृतियां हैं। यह मान्यता है कि भगवान शिव ने अपने अलौकिक नृत्य के द्वारा इस ब्रह्माण्ड की रचना की थी। एक बार उन्होंने अपनी पत्नी पार्वती को नृत्य की चुनौती दी थी। इस मूर्ति-शिल्प में भगवान शिव अपने वाहन नंदी तथा सेवकों के साथ नृत्य करते दर्शाए गए हैं। इस मूर्ति में उन्होंने नटों की भांति अपना एक पैर अपने कंधों के ऊपर तक उठाया हुआ है। चूंकि यह मुद्रा स्त्रियों के लिए सम्मानीय नहीं थी इसीलिए पार्वती ने इस मुद्रा का अनुसरण करने का प्रयत्न ही नहीं किया।

4. नटराज, बादामी, कर्नाटक

चट्टानों को तक्षित कर निर्मित वास्तुनिर्माण के नमूने तमिलनाडु के महाबलिपुरम् (छठी से आठवीं शताब्दी), महाराष्ट्र के अजंता और एलोरा (दूसरी से नौवीं शताब्दी), ओड़िशा के उदयगिरी में (सामन्य काल से पूर्व दूसरी शताब्दी से ईसा पश्चात् पाँचवीं शताब्दी) तथा कर्नाटक के बादामी और एहोले में (छठी से आठवीं शताब्दी) पाए जाते हैं। बादामी की प्राकृतिक पहाड़ियों में स्तंभों युक्त सुंदर भवन या मंडप तथा आदमकद मूर्तिया तराशी गई हैं। प्रस्तुत चित्र में दर्शाई गई भगवान नटराज की यह आकृति उस युग में प्रचलित मूर्तिकला शैली का उदाहरण है। इसमें हाथ तथा पैरों की विशेष स्थिति को दर्शा कर नाटकीयता पैदा की गई है। अट्ठारह भुजाओं वाले भगवान शिव गणेशजी के साथ, अवनद्ध (ढोल, आदि) वाद्यों की संगति में नृत्य कर रहे हैं। पृष्ठभूमि में उनका वाहन नंदी भी दिखलाई पड़ रहा है।

5. आम दृश्य, मंदिर समूह, पट्टदकल कर्नाटक

पट्टदकल चालुक्यवंश की पूर्व राजधानियों बादामी तथा एहोले के पश्चात् तीसरी राजधानी था तथा यह बादामी से सोलह किलोमीटर दूर है। यह मालप्रभा नदी के तट पर स्थित है। यह नगर प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है तथा राजा विजयादित्य एवं विक्रमादित्य के शासनकाल में यह साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। यहां की वास्तुनिर्माण कला शैली आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विकसित हुई थी।

पट्टदकल में नागर तथा द्रविड़ शैलियों में निर्मित मंदिरों को देखा जा सकता है। इनकी वास्तुनिर्माण कला का गहराई से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि दोनों शैलियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया था।

मुख्य मंदिर के पूर्व में स्थित जैन मंदिर का संबंध राष्ट्रकूट काल से जोड़ा जाता है।

6. वीरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

भगवान शिव को समर्पित वीरूपाक्ष का यह मंदिर द्रविड़ शैली में बनाया गया है। चालुक्य राजाओं ने पल्लवों पर विजय प्राप्त कर यह आदेश दिया था कि तमिलनाडु के कांचीपुरम् में स्थित कैलाशनाथ मंदिर की नकल पर वीरूपाक्ष मंदिर बनाया जाए। इस मंदिर में भी विशिष्ट क्षितिजिय स्तरों वाला शिखर, दीवारों पर मूर्ति फलक और उत्कीर्ण स्तंभों वाला मंडप है। यह सारा परिसर एक दीवार से घिरा हुआ है तथा प्रवेश द्वार पर एक छोटा सा गोपुरम है।

7. कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, महाराष्ट्र

आठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य राजाओं को पराजित कर दक्खन पर विजय प्राप्त की थी। वैसे तो यहां पर ऐसे अनेक स्थान हैं जहां राष्ट्रकूटों की कला को देखा जा सकता है पर मुख्य स्थान है–एलोरा। यहां उस काल की भवन निर्माण कला एवं वास्तुकला की विशिष्टताओं के भव्य समन्वित रूप में कृष्ण (प्रथम) द्वारा चट्टानों को काट कर बनवाया गया कैलाशनाथ मंदिर स्थित है। आम परिपाटी के विपरीत इस मंदिर का निर्माण कार्य इसकी चोटी से शुरू किया गया था। वास्तुकारों ने अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक कार्य योजना बनाकर चट्टानों को तराशा था। इसके गर्भगृह के प्रवेशद्वार के दोनों तरफ गंगा तथा यमुना की बड़ी आकृतियां थीं। अब वे मस्तकविहीन हैं।

यह कैलाशनाथ मंदिर अपने डिज़ाइन के कारण तमिलनाडु के कांचीपुरम् के कैलाशनाथ मंदिर तथा कर्नाटक के वीरूपाक्ष मंदिर से काफी साम्यता रखता है, पर उनकी तुलना में इसका आकार बड़ा है।

8. नटराज, कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा, महाराष्ट्र

आठवीं शताब्दी का यह मूर्ति फलक अपने सेवकों से घिरे संगीत की संगति में नृत्य करते भगवान शिव को दर्शा रहा है। उनकी नृत्य मुद्रा, हाथ और पैरों की स्थिति ठीक कुछ वैसी ही है जैसी कि कुछ वर्तमान नृत्य–शैलियों में होती है। वैसे इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि इस पाषाण की मूर्ति पर प्लस्तर और रंग किया गया था। यह संपूर्ण मूर्ति एक आले में स्थित है जिसके चारों तरफ पुष्प और पुष्प मालाएं उत्कीर्ण हैं।

9. वृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर, तमिलनाडु

दसवीं शताब्दी ईस्वी में चोलों ने पल्लवों पर विजय प्राप्त की। भारतीय इतिहास में चोल-काल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियों का उल्लेख प्राप्त होता है, क्योंकि प्रसिद्ध चोल कांस्य शिल्प कृतियों को भारतीय कला की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में जाना जाता है।

तंजावुर स्थित वृहदेश्वर मंदिर एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोल स्मारक है। इस मंदिर को शिव-महिमा के कारण वृहदेश्वर कहा जाता है। इसे ''राजाओं के राजा'' राजराजा प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया। स्वयं राजा ने राजतिलक के समय अपना नाम इसी प्रकार घोषित किया था।

मंदिर की वास्तुकला-योजना अत्यंत साधारण-सी है। प्रसाद, मंडप, नंदी और गोपुरम् पूर्व-पश्चिम अक्षांश के ठीक ऊपर अवस्थित हैं। मंदिर का सर्वाधिक प्रभावकारी पहलू है-उसका विमान। यह साठ मीटर ऊंचा है और निर्माण के समय शायद यह एशिया की सबसे ऊँची वास्तुकला-संरचना रही होगी। विमान के ऊपर अवस्थित विशाल शिखर का वजन अस्सी टन से भी अधिक होगा, ऐसा माना जाता है। चित्र (आन्तरिक चित्र) में हम शिखर की चौदह अवरोहात्मक मंज़िलें देख सकते हैं। विमान के दोनों ओर बैठे हुए अग्रोन्मुख शीर्ष वाले नंदी हमें महाबलीपुरम् में नंदी के प्रतिरूप की याद दिलाते प्रतीत होते हैं। तीर्थ मंदिर में स्थापित लिंग मंदिर के ही समान, आकार में विशाल हैं। विमान के चबूतरे पर स्थित कुछ शिलालेख चोल-काल के दौरान जीवन-शैली का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

इस मंदिर को स्वयं राजराजा-प्रथम के नाम के आधार पर ''राजराजेश्वर मंदिर'' अथवा ''महान मंदिर'' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि उस समय शैव मंदिरों में स्थापित लिंग का नाम, प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा राजा या संरक्षक के नाम पर रखने की परंपरा प्रचलित थी।

10. सोमस्कन्द, राजकीय संग्रहालय, मद्रास

पल्लव और चोल काल के दौरान बड़े-बड़े मंदिरों और सुंदर पाषाण मूर्तियों के साथ-साथ उच्च-कोटि की कांस्य प्रतिमाएं भी निर्मित हुई थीं। इन कांस्य प्रतिमाओं को बनाने के लिए कारीगर पहले मोम का एक ढांचा बनाते थे और फिर उस ढांचे या आकृति पर मिट्टी की परतें चढ़ा दी जाती थीं। सूखने पर ढांचे की पेंदी में छेद करके उसे गर्म किया जाता था जिसमें अंदर की सारी मोम पिघल कर निकल जाती थी। इसके पश्चात् उस ढांचे में पिघली धातु भर कर ठंडा होने दिया जाता था। ठंडा होने पर मिट्टी की परत उतार कर उस आकृति को संवार कर पॉलिश की जाती थी। प्रस्तुत चित्र में भगवान शिव और पार्वती को बैठी मुद्रा में दर्शाया गया है। उनके बीच में पहले कार्तिकेय या स्कंद की मूर्ति भी थी, पर आज वह गुम हो गई है। ध्यान से देखने योग्य बात यह है कि धातु किस प्रकार मोम के तरल गुण को धारण कर लेती है, किस प्रकार सूक्ष्म रूप में गहनों को गढ़ा जा सकता है और वस्त्रों को सजाया जा सकता है।

11. सूर्य मंदिर, मोदेरा, गुजरात

सोलंकी राजवंश ने 11वीं शताब्दी ईस्वीं में सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है तथा इसी प्रकार के सूर्य मंदिर ओड़िशा के कोणार्क में तथा कश्मीर के मार्तंड में भी हैं। मंदिर के सम्मुख एक विशाल तालाब है तथा जलस्तर तक ढलुवां सीढ़ियों के द्वारा पहुंचा जा सकता है। धार्मिक अनुष्ठानों में इस जल का उपयोग किया जाता था। तालाब के पायदानों पर भी छोटे-छोटे मंदिर तथा दीपक रखने के लिए आले बने हुए हैं। यद्यपि इस मंदिर का एक भाग क्षतिग्रस्त हो गया है लेकिन फिर भी जिस विस्तृत पैमाने पर इसकी सजावट की गई थी, उसे आज भी देखा जा सकता है।

12. सूर्य की मूर्ति, सूर्य मंदिर, मोदेरा, गुजरात

भगवान सूर्य की आराधना भारतीय जीवन, विधारधारा तथा दर्शन का एक महत्वपूर्ण भाग रही है। प्रस्तुत मूर्ति-शिल्प में भगवान सूर्य को इंद्रधनुष के रंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर खड़ी मुद्रा में दर्शाया गया है। प्रतिदिन सूर्य के उदय होने पर प्रकृति में होने वाली प्रतिक्रिया को दर्शाने के प्रतीक के रूप में भगवान सूर्य के प्रत्येक कंधे पर खिले हुए कमल के विशाल फूल अंकित किए हुए हैं। भगवान सूर्य के साथ उनकी पत्नियां ऊषा एवं छाया सेवकों सहित दर्शायीं गई हैं।

13. मंदिर समूह, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों की कुछ खास विशेषताएं हैं। लगभग सभी मंदिर एक ऊँचे और ठोस चबूतरे-जगती-पर बनाए गए हैं। यह चबूतरा खुले प्रदक्षिणा पथ का काम भी देता था। इनके प्रवेशद्वार वास्तु निर्माण कला एवं मूर्तिकला की बेजोड़ उपलब्धि हैं।

प्रस्तुत चित्र में आप कंदरिया महादेव के मंदिर को देख रहे हैं। इसी चबूतरे पर दाहिनी तरफ छोटा महादेव का मंदिर तथा देवी जगदंबा का मंदिर भी देख सकते हैं।

कंदरिया महादेव का मंदिर खजुराहो का भव्यतम मंदिर माना जाता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा कंदरिया का अर्थ है–कंदराओं में विचरण करने वाले भगवान शिव। मंदिर के मुख्य स्थान में संगमरमर का लिंग स्थापित है। यह पूर्वाभिमुखी है तथा प्रवेशद्वार इकहरे पत्थर से निर्मित है। दोनों ओर से पौराणिक मगरमच्छों के मस्तक पर जो माला है, वह चार फेरों में अत्यंत अलंकृत रूप में उत्कीर्ण की गई है। कंदरिया महादेव एवं देवी जगदम्बा के मंदिर के मध्य में छोटा महादेव का मंदिर स्थित है। एक सिंह तथा मंडप में एक झुकी हुई आकृति मंदिर की महत्वपूर्ण मूर्तियां हैं।

देवी जगदंबा का मंदिर मूलत: भगवान विष्णु को समर्पित था मगर बाद में देवी की एक अर्ध निर्मित मूर्ति ने इसका नाम परिवर्तित किया। मंदिर की बाहरी दीवारों पर मूर्तियों की तीन पट्टिकाएं हैं। इसी मंदिर में तीन मस्तक और अष्टभुजा वाले भगवान शिव तथा भगवान विष्णु के वराह-अवतार की ध्यानाकर्षक मूर्तियां भी हैं।

मंदिर का शिलालेख यह दर्शाता है कि राजा धंगदेव ने इसका निर्माण करवाया था और वहां एक शिला तथा मरकत लिंग स्थापित किया।

14. विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिर मध्य भारत की वास्तुकला के शताब्दियों के विकास के पश्चात् उसके चरमोत्कर्ष रूप को दर्शाते हैं। ये मंदिर चंदेल काल के निवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं। इन मंदिरों की एक अन्य खास विशेषता उनकी विशिष्ट वास्तुनिर्माण कला है। प्राय: सभी मंदिर एक ऊंचे और ठोस चबूतरे पर स्थित हैं।

विश्वनाथ मंदिर की धरातलीय एवं ऊपरी योजना कंदरिया महादेव मंदिर तथा लक्ष्मण मंदिर से मेल खाती है। प्रवेशमार्ग के साथ की तीन मूर्तिमय पट्टिकाएं खजुराहो की सुंदरतम मूर्तियां दर्शाती हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा इसमें शिवलिंग स्थापित है। इस मंदिर की छत पर अनेक दलों वाले फूल उत्कीर्ण हैं। मंदिर का मुख्य शिखर शंकु के आकार का है तथा उसके आसपास अनेक छोटे शिखर हैं जो पर्वतमाला का आभास देते हैं।

मंदिर का शिलालेख यह दर्शाता है कि राजा धंगदेव ने इसका निर्माण करवाया था और वहां एक शिला तथा पन्ना मिश्रित लिंग स्थापित किया।

15. मूर्तिमय फलक, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों में वास्तुनिर्माण कला एवं मूर्तिकला अपने सुंदरतम रूप में उभरी है। मंदिरों की दीवारें आंतरिक एवं बाहरी दोनों तरफ प्रचुर रूप से उत्कीर्ण हैं। उनमें स्त्री-आकृतियों एवं प्रेमरत युगलों की प्रचुरता को देखकर विद्वान अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं।

प्रस्तुत चित्र में आप आंतरिक आलों में पौराणिक पशुओं की आकृतियों तथा नृत्य करती, वाद्ययंत्र बजाती, दर्पण में स्वयं को निहारती तथा सिंदूर, काजल और आलते से स्वयं का शृंगार करती स्त्री-आकृतियों को देख सकते हैं। इन सभी आकृतियों के परिधान बड़े ही सुंदर हैं तथा उनका अंग-प्रत्यंग आभूषणों से सुसज्जित है। ये सभी आकृतियां दीवार से उभरी हुई हैं तथा कमोबेश मुक्त अवस्था में हैं।

ग्रेनाइट तथा बलुआ पत्थर का उपयोग भवन तथा मूर्तियां बनाने के लिए किया गया है।

16. संगीतकार, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो की मूर्तियों का भंडार वहां रहने वाले उस काल के लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करता है। वहां ऐसे अनेक मूर्तिमय फलक हैं जो घरेलू जीवन, नृत्य तथा संगीत आदि अनेक विषयों को दर्शाते हैं। इस चित्र में दर्शाए गए संगीतकारों से ज्ञात होता है कि उस काल में कैसे वाद्ययंत्र होते थे। इसी से यह भी पता चलता है कि खजुराहोवासी वर्तमान दो मुखी प्रकार की बांसुरी, मंजीरे तथा पखावज से साम्यता रखती ढोलक से परिचित थे।

17. बाह्य दृश्य, केशव मंदिर, बेलूर, कर्नाटक

होयसाल शासकों ने कर्नाटक के मंदिरों के डिजाइन की एक अद्वितीय शैली दी जो बेलूर, हेलीबिड तथा सोमनाथपुर में देखी जा सकती है। इस क्षेत्र में पृथ्वी के धरातल की प्राचीनतम चट्टानों में से एक प्राप्त होती हैं। इन्हें धारवाड़ चट्टान कहा जाता है। यह गहरे रंग का हरियाली आभा लिए काला पत्थर होता है तथा यह इतना बेहतरीन है कि मूर्तिकार उस पर धागे जैसी महीन नक्काशी भी की जा सकती है।

होयसाल राजा विष्णुवर्धन ने अपने वास्तुकार जनक आचार्य को आदेश दिया था कि वह कर्नाटक के हासन जिले के बेलूर में भगवान चन्न केशव का मंदिर बनाए। इस मंदिर में होयसाल वास्तुनिर्माण कला की सभी विशेषताएं जैसे कि तारों के आकार के पूजा-स्थल, चबूतरा, गेंद की आकार की मीनारें तथा स्तंभयुक्त मंडप हैं। इस मंदिर के मंडप में खूबसूरत गोल पत्थर के चबूतरे हैं। समूचा मंदिर परिसर 440 × 360 फीट के विशाल आयताकार क्षेत्र में फैला है। मंदिर परिसर में पारंपरिक गोपुरम बाद में निर्मित हुए थे।

18. केशव मंदिर, सोमनाथपुर, कर्नाटक

सोमनाथपुर का केशव मंदिर वास्तुकला की होयसाल शैली का अनुपम उदाहरण है। होयसाल वंश के राजाओं एवं वासियों ने अपने पूजा स्थलों के लिए वास्तुनिर्माण की नई पद्धति विकसित की थी। समूचा मंदिर तारे की आकृति वाले चबूतरे पर निर्मित है। तारे की यह आकृति मंदिर के विमान और शिखर में भी देखी जा सकती है। मंदिर के तारों की आकृति वाले तीन शिखर हैं जो इसके तीन गर्भगृहों की ओर संकेत करते हैं जिनमें देवताओं की मूर्तियां स्थापित थीं। इसके मध्य का कक्ष तीन पवित्र कमरों से जुड़ा है जिसमें उत्कीर्ण स्तंभ एवं दीवारगीर हैं। मंदिर की बाहरी दीवारें नीचे से लेकर शिखर तक आड़ी मूर्तिमय पट्टियों से अलंकृत हैं। इन आकृतियों में पशु, पौराणिक चरित्र तथा महाभारत और रामायण के दृश्यों के साथ देवताओं की आकृतियां हैं।

19. मूर्ति–फलक, हेलीबिड, कर्नाटक

होयसाल मंदिर की समूची दीवार को अनेक मूर्ति-फलकों में विभाजित किया जा सकता है। दीवार के निचले भाग पर जलूस के रूप में जाते हाथियों की कतारें उत्कीर्ण हैं। इनके ऊपर अश्वों की आकृतियां तथा उनके पहले फूलों एवं लताओं को उत्कीर्ण किया हुआ है। इस कतार के ऊपर काल्पनिक जीवों हंसों, देवी-देवताओं की विशाल सजावटी मूर्तियों की कतार है। सबसे पहले रेखागणितीय डिजाइन वाली छत है जो कि प्राचीन सुंदर काष्ठ भवन निर्माणकला का प्रतिरूप प्रतीत होती है।

नटराज, हेलीबिड, कर्नाटक

होयसाल मंदिर की विशाल मूर्तियों को एक निश्चित आकार-प्रकार (बनावट) को उत्कीर्ण किया गया है। मुख्य आकृति फूलों और लताओं के शोभायमान चंदोवे से घिरी हुई है। देवताओं की आकृतियां शास्त्र-पद्धति या शास्त्रानुसार भारी आभूषणों से अलंकृत हैं। इस मूर्ति शिल्प में भगवान शिव को अज्ञानता के दानव अपस्मार की लेटी हुई मुद्रा में तक्षित आकृति के ऊपर नृत्य करते दर्शाया गया है। उनके हर हाथ की एक विशेष नृत्य मुद्रा है। नटराज की इस मूर्ति-शिल्प की तुलना अन्य कालों और स्थानों की नटराज की मूर्ति से कर के देखिए।

20. सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

वर्तमान ओड़िशा राज्य की सीमाओं में आज भी सुंदर मंदिरों की एक शृंखला विद्यमान है। इनसे कलिंग वंश के इतिहास का आद्योपांत ज्ञान होता है।

इस काल की वास्तु रचना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कोणार्क का सूर्य मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण नरसिंह प्रथम द्वारा 1238-58 ईस्वी के बीच करवाया गया था। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। यह सूर्य मंदिर एक बड़े चौकोर प्रांगण में स्थित है और इसका निर्माण सूर्य देव के सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले बड़े रथ के समान है।

सूर्य मंदिर की रथ के रूप में कल्पना के पीछे भारत के विभिन्न भागों में समारोहों के अवसर पर लकड़ी की गाड़ियों में देवताओं की निकाली जाने वाली शोभा यात्राओं का प्रचलन रहा होगा। भगवान सूर्य के इस रथ में बारह जोड़ी पहिए दर्शाए गए हैं जो कि वर्ष के बारह महीनों के प्रतीक हैं।

बंगाल की खाड़ी के समीप होने के कारण इस मंदिर को वातावरण की लवणता ने काफी क्षति पहुंचाई है। अब भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने इसके संरक्षण का काम अपने हाथ में लिया है।

21. चक्र, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

सूर्य मंदिर के संपूर्ण डिजाइन की कल्पना भगवान सूर्य के दिव्य रथ के रूप में की गई थी।

इस की मंत्र-मुग्ध करने वाली आकृतियों में इसके विशालकाय चक्र हैं। हर चक्र का व्यास तीन मीटर से अधिक है तथा इसके आठ बड़े और आठ छोटे अरें हैं। धुरे सहित सभी चक्रों पर बहुत ही आकर्षक रूप से दानेदार घेरों तथा कमल की पत्तियों की पंक्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। चक्रों के नीचे की चित्रवल्लरी पर चलते हुए हाथियों के समूह को बड़ी सूक्ष्मता से उत्कीर्ण किया गया है।

22. चित्रित फलक, नर्तक, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

कोणार्क का सूर्य मंदिर कला का अथाह भंडार है। यहां की मूर्तियां, यहां की स्थापत्यकला पर प्रभुत्व तो नहीं रखती परंतु मंदिर की सुन्दरता को बढ़ा देती हैं।

इस मंदिर की मूर्तियां क्लोराइट, लेटराइट तथा खोंडेलाइट नामक तीन प्रकार के पत्थरों से बनाई गई हैं। यह पत्थर अवश्य ही बाहर के स्थानों से यहां लाए गए होंगे क्योंकि आज इस स्थान के आस-पास इनमें से कोई भी पत्थर उपलब्ध नहीं हैं।

सूर्य मंडप के सम्मुख उठे हुए चबूतरे को नाट्य मंडप कहते हैं। समूची दीवार पर विभिन्न मुद्राओं में संगीतकारों एवं नर्तकों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। इन आकृतियों से हम तेरहवीं शताब्दी में प्रचलित नृत्य-शैलियों का अध्ययन कर सकते हैं तथा उनकी वर्तमान ओड़ीसी नृत्य-शैली के साथ तुलना कर सकते हैं। कलाकार ने नर्तक की त्रिभंग की स्थिति, उसकी मुद्रा, उसके परिधान एवं आभूषणों का बड़ी कुशलता से प्रदर्शन किया है। मूर्तिकार ने सारी दीवार को आकाश में प्रतिदिन भ्रमण करते भगवान सूर्य के सम्मान में नृत्य एवं संगीत प्रस्तुत करते संगीतकारों और नर्तकों की आकृतियों से सुसज्जित किया है।

23. ताड़ के पत्ते पर लिखी पांडुलिपि, बिहार

मध्य काल में भवन निर्माणकला विशेषकर मंदिरों का निर्माण, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और साहित्य आदि कलाएं राज दरबार के संरक्षण में खूब विकसित हुई। भारत के सभी भागों में ताड़ के पत्ते पर उत्तम चित्रों वाली पांडुलिपियों को तैयार किया गया। कागज के निर्माण से पहले महत्वपूर्ण धार्मिक मूलग्रंथों की पांडुलिपियां ताड़ के पत्तों पर तैयार की गई। इसके लिए सबसे पहले पत्ते को सुखाकर समतल (प्रेस) किया जाता था। प्रत्येक पत्ते को मूल ग्रंथ में, सचित्र तथा सुसज्जित किनारों के लिए खंडों में विभक्त किया गया। फिर, कूंचियों की सहायता से डिजाइन बनाए जाते थे। इस चित्र में बैठे दिखाई दे रहे दो बौद्ध-भिक्षु महात्मा बुद्ध की शिक्षा की व्याख्या कर रहे हैं।

24. भित्तिचित्र, श्रीनाथजी की आराधना, नाथद्वारा राजस्थान

यह प्राचीन चित्र अठारहवीं शताब्दी का है। इस भित्तिचित्र में कृष्ण की आराधना तथा मंदिर में होने वाले विभिन्न अनुष्ठानों को चित्रित किया गया है। चित्र को देखकर यह जानकारी मिलती है कि फूलों, वस्त्रों तथा आभूषणों से देवताओं की मूर्तियों का किस प्रकार शृंगार किया जाता था। मध्य काल में भक्तिवाद ने अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संतों, कवियों और संगीतकारों ने देवी-देवताओं के सम्मान में भक्तिपदों की रचना की थी।

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
2

1. Five Rathas, Mahabalipuram, Tamil Nadu

Mahabalipuram, the port city of the Pallavas situated about 55 kms. south of Chennai is famous for its rock cut monoliths belonging to the 7th century C.E.

During their rule in South India, the Pallavas constructed a large number of temples throughout their kingdom. The early phase of architectural activity of the Pallavan rule mainly consisted of rock cut monuments and the later phase is known for structural buildings.

There are many free standing monolithic buildings scattered in Mahabalipuram of which the five *rathas* near the sea popularly known as the *'Panch Pandava Rathas'* are Dharmaraja ratha, Bhima ratha, Arjuna ratha, Draupadi ratha and Nakula Sahadeva ratha. These were probably carved out during the reign of Mamalla I. One sees the beginning of an elaborate style of temple architecture of several storeys and having a variety of roof styles.

It is interesting to note that some of the roofs closely resemble the thatched roof of village homes.

2. Kailasanatha Temple, Kanchipuram, Tamil Nadu

Kanchipuram is studded with Pallava monuments, the most famous of which is the Kailasanatha Temple. Facing its Nandi mandapa in the East, the temple has a circumbulatory passage, containing a number of cells.

This temple is also known as Rajasimhesvara a name that may have arisen from a verse in one of its inscription, which states that the *shikara* of the Kailasanatha temple meets the sky and robs the beauty of mount Kailasa.

A panel at the base of the temple, consists of sculptured *ganas* alongwith other creatures showing the dexterity of the artisans.

While studying the temple, one finds that the emergence of the pre-Pallavan theme of showing *Somaskanda*.

3. Nataraja, Kailasanatha Temple, Kanchipuram, Tamil Nadu

The walls of the Kailasanatha temple are profusely carved with panels of sculptures depicting episodes from stories of myths and legends. The Kailasanatha temple is dedicated to Siva, and has many sculptures of Siva and his attendants. Siva is said to have created the universe through his cosmic dance. Siva also challenged Parvati, his wife to a dance competition. In this sculpture, Siva is dancing along with Nandi, his *vahana* and other attendants. He has lifted one leg high above his shoulder in an acrobatic pose, this was the pose which Parvati, did not want to attempt as it was not a graceful posture for a woman.

4. Nataraja, Badami, Karnataka

Rock cut architecture is found at Mahabalipuram in Tamil Nadu (6th to 8th century C.E.), in Ajanta and Ellora in Maharashtra (2nd to 9th century C.E.), at Udaigiri in Odisha, (2nd century B.C.E. to 5th century C.E.), and in Badami and Aihole in Karnataka (6th to 8th century C.E.). In the natural hill side at Badami, beautiful halls or *mandapas* have been carved with pillars and life size sculptures. The Nataraja shown in this picture is an excellent example of high quality sculptural skills that were prevalent during this period. The dramatic quality of this work is achieved by the position of the arms and feet. Siva with eighteen arms is shown dancing accompanied by Ganesh and a drum player. Nandi is seen in the background.

5. General View, Group of Temples, Pattadakal, Karnataka

Pattadakal, the third of the Chalukyan capital seat after Aihole and Badami is about sixteen kilometres from Badami. It is located on the banks of Malprabha river. Pattadakal is known for its beautiful early western Chalukyan temples. The kingdom reached its zenith under the rule of Vijayaditya and Vikramaditya. The style of architecture of Pattadakal evolved in the first half of the eighth century.

At Pattadakal, the two styles of temples—*nagara* and *dravida* can be seen. While studying the architectural details, one finds that both the styles have influenced one another.

The Jain Temple to the east of the main temple site has been associated with the Rashtrakutas period.

6. Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

The Virupaksha Temple built in the Dravidian style was dedicated to Lord Siva. The Chalukyan kings who had conquered the Pallavas wanted the Virupaksha Temple to be built on the lines of Kailasanatha Temple of Kanchipuram, Tamil Nadu. This temple also has *shikara* of distinct horizontal levels, sculptured panels on the walls and a *mandapa* of carved pillars. The entire complex is surrounded by a boundary wall and a small *gopuram* at the entrance.

7. Kailasanatha Temple, Ellora, Maharashtra

The Rashtrakutas conquered the Deccan from the early Western Chalukyas in the 8th century. There are many sites at which the art of the Rashtrakutas can be seen. but the principal site associated with them is at Ellora. Here is one of the greatest combinations of architectural and engineering feats of that bygone era—the rock cut temple which was built under Krishna I, known as the Kailasanatha temple. In this temple, the architect began work from the top and the sides unlike the structural temples which are built up from the foundation at the ground level. The architect envisaged the plain in minute detail and then cut away the rock piece by piece, removing exactly what was not required in his design. The entrance to the *garbhgriha* of the Kailasanatha temple is flanked by large figures, now headless, of the river goddesses Ganga and Yamuna.

Though the Kailasanatha temple at Ellora is bigger in size but the design is similar to the Kailasanatha temple at Kanchipuram in Tamil Nadu and the Virupaksha temple in Karnataka.

8. Nataraja, Kailasanatha Temple, Ellora, Maharashtra

This 8th century A.D. sculptured panel depicts Siva dancing to the accompaniment of music surrounded by many attendants. The dance pose, the position of the feet and arms are similar to those seen in certain dance forms of today. There is some evidence that this stone sculpture was painted with plaster and colours. The entire sculpture is in a niche which has a carved frame of flowers and garlands.

9. Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

The Cholas succeeded the Pallavas in the 10th century C.E. In Indian history, the Chola periods is seen as one of considerable artistic achievements, the famous Chola bronze sculptures are considered master-pieces of Indian Art.

The Brihadesvara temple at Thanjavur is the most important Chola monument. The temple is called the Brihadesvara in reference to Siva's greatness. It was built by Rajaraja I "King of Kings", as he announced himself on his coronation.

The plan of the great temple is a very simple one. *Prasad Mandapa, Nandi* and the two *gopurams* are all exactly aligned on the east-west axis. The most impressive aspect of the temple is its *vimana,* which reaches to a height of sixty metres and may have been the tallest structure in South Asia at the time it was built. The huge *shikhara* atop the *vimana* is believed to weigh more than eighty tons. In the picture (inset), one sees the fourteen diminishing tiers of the *shikhara.* The Nandis on the *vimana,* seated sideways but with their heads turned to the front, remind us of their counterparts at Mahabalipuram. The *ling* enshrined in the sanctuary is colossal in size, like the temple itself. There are several inscriptions on the platform of the *vimana* giving details of life during the Chola period.

The temple is also known as the 'Great Temple' or the 'Rajarajesvara Temple' named after Rajaraja I himself. It was a common practice to name the *linga* enshrined in the Saivite temple after a famous individual, King or patron.

10. Somaskanda, Government State Museum, Chennai

During the Pallava and Chola period, great temples and excellent stone sculptures were produced alongwith bronze sculptures of exquisite quality. To make these sculptures, the artist first prepared the model in wax with all its intricate details. The image in this picture was covered with coatings of mud which was allowed to dry. A hole was made at the base and then heated to let the wax flow out of the mould. Hot liquid metal was poured into the mould and allowed to cool. The mud covering was then removed and the metal image was given its final touches before it was polished. The image in this picture depicts Siva and his wife Parvati in a seated posture. Between them would have been the image of Kartikeya or Skanda which is now missing. Notice, how the metal retains the fluid quality of the wax, the way the garments are draped and the fine carvings of details of jewellery.

11. Surya Temple, Modera, Gujarat

The Surya Temple was built in the 11th century C.E. under the Solanki dynasty. The temple is dedicated to Surya, the Sun God, there are similar temples at Konarak in Odisha, and at Martand in Kashmir. In front of the temple is a large tank with steep steps leading down to the sacred water which is used for ritualistic ablutions. These stairs have also been decorated with small shrines and niches for placing offerings of *diyas* (lamps). A part of the temple has fallen into ruin, however, we can still see the grand scale in which the decorations were done for this temple.

12. Sculpture, Surya Mandir, Modera, Gujarat

Sun worship is an important aspect of Indian life, thought and philosophy. In this sculpture, the Sun is depicted as standing on his chariot drawn by seven horses representing the colours of the rainbow. Two large lotus flowers bloom above his shoulders representing nature's response to the appearance of the Sun in the sky every day. Here, Surya is shown accompanied by his wives, Ushas and Chhaya and his attendants.

13. Group of Temples, Khajuraho, Madhya Pradesh

There are certain distinctive features of the temples at Khajuraho. Almost all have been constructed on a high and solid platform, the *jagati.* This platform provides an open ambulatory. The doorways are unique achievements of both architecture and sculpture.

In this picture, we see the Kandariya Mahadev temple sharing the platform with the small Mahadev temple and the Devi Jagadamba temple on its extreme right.

The Kandariya Mahadev temple is considered as the most magnificent temple of Khajuraho. Kandariya denotes 'Siva who dwells in a mountain cave' and the temple is dedicated to Siva. A marble *lingam* is enshrined in the main sanctum. The temple faces east and the gateway is made up of a single stone. A garland that rests on the heads of mythical crocodiles has been carved ornamentally into four loops.

The small temple of Mahadev stands between Kandariya Mahadev and Devi Jagadamba temple. A lion alongwith the kneeling figure in the *mandapa* of the temple is the most important sculpture.

The Devi Jagadamba temple was originally dedicated to Vishnu but later the unfinished image of the goddess determined its name. The temple has three bands of sculptures on the outer walls. The temple also has two interesting sculptures of the three-headed eight-armed Siva and the Varaha, incarnation of Vishnu.

14. Vishwanatha Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The Khajuraho temples represent the culmination of the central Indian style of architecture which had evolved over centuries. These temples throw light on the social, economic and religious life of the people who lived there during the time of the Chandellas. One of the most notable features of the Khajuraho temples are their distinctive style of architecture. Almost all the temples stand on a high and solid platform.

The ground and elevation plan of the temple resembles the Kandariya Mahadev and Lakshmana temples. The three broad bands of sculptures alongwith the passageway contain some of the most exquisite sculptures of Khajuraho. The Vishwanatha temple is dedicated to Siva and enshrines a *sivalinga.* There are many-petalled flowers which have been carved in the ceiling of this temple. The main *shikhara* of the temple is conical in shape and is surrounded by smaller *shikharas* giving the impression of a mountain range.

A stone slab inscription of the temple states that king Dhangadeva built this temple and had installed a stone mixed with emerald lingam.

15. Sculpture Panels, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The art of sculpture and architecture merge most beautifully at Khajuraho. The walls of the temples are profusely carved both internally and externally. The profusion of female figures and loving couples in the main temple walls has inspired scholars to offer several theories.

In this picture, you see the mythical animals in the inner niches wheareas the female figures are seen in dance poses, playing musical instrument, looking in the mirror, adorning themselves with *sindur, kajal and alta.* All the figures are dressed in fine garments. Jewellery is worn in the hair, neck, arms, waist, ankles and feet. These figures have been sculpted protruding out of the wall—more or less free-standing.

Granite and sandstone have been used for buildings and sculptures at Khajuraho.

16. Musicians, Khajuraho, Madhya Pradesh

The sculptural treasure of Khajuraho gives us information on the social, economic and religious life of the people of that time. There are a number of sculptural panels which have miscellaneous themes, including domestic life and scenes showing dance and music activities. This picture showing a group of musicians performing give us an idea about the musical instruments of that time. Here we can see that the people of Khajuraho were familiar with two types of flutes, cymbals and a drum similar to the contemporary horizontal two faced Pakhawaj.

17. Exterior View, Kesava Temple, Belur, Karnataka

The Hoysala rulers gave to Karnataka, a unique temple design which is seen at Belur, Halebid and Somnathpur. In this area, are found some of the most ancient rocks of the earth's crust, called Dharwar Schist. It is a dark, greenish black stone, that gives to these temples and sculptures a particular glow, and is so closely textured and fine that almost lace-like carving was possible on this stone.

The Hoysala King Vishnuvardhan is said to have directed his architect, the legendary Janaka Acharya to build a temple to God Channa Kesava at Belur in the Hassan district of Karnataka. The temple with its star shaped shrine, platform, bell shaped towers and pillared *mandapas* has all the essentials of the Hoysala style of architecture. The *mandapa* of this temple has one of the most beautiful circular stone platforms. The entire temple is set within a vast rectangular enclosure of 440 ft. × 360 ft. The traditional *gopurams* in the temple premises were added at a later date.

18. Kesava Temple, Somnathpur, Karnataka

The Kesava temple of Somnathpur is an outstanding example of Hoysala style of architecture. The Hoysalas evolved new patterns in architecture for their places of worship. The whole temple at Somnathpur has been built on a star-shaped platform and the star shape continues through to the *vimana* and *shikhara.* There are three star shaped *shikharas* in this temple which indicate three *garbhagrihas* in which images of the Gods were installed. The central hall links the three sacred rooms and has carved pillars and brackets within them.

The exterior walls are ornamented with sculptures which begin from the ground level in horizontal bands and continue right upto the top of the *shikhara.* These sculptured borders show animals, mythological characters, scenes from the Mahabharata and Ramayana alongwith images of deities and bracket figures.

19. Sculptural Panels, Halebid, Karnataka

The entire wall of the Hoysala temple can be divided into several bands of sculptures. The lowest level is occupied by a row of elephants in procession. Above them are a line of horses, then one can see floral and creeper designs. Above the creeper designs are rows and rows of mythical creatures, *hansas,* decorative sculptures of gods and goddesses and finally geometric designs of the roof that imitate beautiful older wooden forms of architecture.

Nataraja, Halebid, Karnataka

The larger sculptures of the Hoysala temple are carved in a particular style. The main figure is surrounded by an ornamental canopy of creepers and flowers. The figures of the deities are decorated with heavy jewellery. Nataraja is seen here dancing upon the fallen figure of Apasmara, the demon of ignorance. Each hand of Siva depicts a dance *mudra.* One can compare this sculpture with other Nataraja figures from different places and historical periods for similarity in symbols associated with the Nataraja.

20. Sun Temple, Konarak, Odisha

The present day territory of the state of Odisha has the prized distinction of possessing a series of beautiful temples illustrating the history of the Kalingas from its inception. The supreme achievement of the architectural genius of the period is the Sun Temple at Konarak. The temple was built by Narasimha I during 1238-58 A.D. As the name suggest, the temple is dedicated to Surya. The Sun Temple situated within the centre of a large quadrangular compound was conceived and designed in the shape of a huge chariot, the *ratha* of the Sun God drawn by seven horses. The concept of the Sun Temple as a chariot may be based on the practice prevalent in various parts of India using a large wooden cart, *ratha* for processions of deities through the city streets on festival occasions.

There are twelve pairs of wheels on the plinth of the chariot of the Sun God. These twleve pairs of wheels represent the twelve months in a year.

Due to its proximity to the Bay of Bengal, the salt in the moisture has caused extensive damage to the temple. The Archaeological Survey of India, however, has taken up the monumental task of its conservation.

21. Wheel, Sun Temple, Konarak, Odisha

The complete design of the Sun temple was conceived as the celestial chariot of Surya, the Sun God. One of the fascinating features of this temple are its gigantic wheels. Each wheel is more than three metres in diameter and has eight major and eight minor spokes. All the wheels, including its hub have been exquisitely carved with beaded rings and a row of lotus petals. A band of elephants in procession is a running freize minutely carved underneath the wheels.

22. Sculptural Panel, Dancers, Sun Temple, Konarak, Odisha

The Sun Temple at Konarak is a treasure house of art. The sculptures in this temple do not dominate the architecture but add to the beauty of the temple.

Three kinds of stones, chlorite, laterite and khondalite have been used for the sculptures. The stone must have been brought from other places as none of these are available in the vicinity today.

In front of the Surya *mandapa* is a raised platform called the *natya mandapa.* The entire wall is carved with sculptures of musicians and dancers in various poses. From the sculptures, we can study the style of dance popular in temples of the 13th century and can compare it to the Odissi dance style of today. The artist has captured the *tribhanga* posture of the body, the *mudras,* and the costume and jewellery worn by the dancer. The artist has adorned the temple walls with figures of musicians and dancers as if they are offering dance and music to the Sun God—Surya, as he makes its journey across the sky each day.

23. Palm Leaf, Manuscript, Bihar

During the medieval period, sculpture, painting, music, dance and literature all blossomed under the patronage of the courts. Exquisitely illustrated manuscripts on palm leaf were produced in all parts of India. Under the Pala dynasty in eastern India, Buddhist monasteries prepared a number of manuscripts of important religious texts on palm leaf before the introduction of paper. The palm leaf was first dried and pressed. Each leaf was divided into sections for the text, the illustration and decorated borders. The designs were made with a paint brush or stylus. In this painting, we see two seated *Bodhisatvas* explaining the teachings of Buddha.

24. Painting, Worship of Srinathji, Nathdwara, Rajasthan

This painting of the 18th century C.E. illustrates the worship of Krishna and the different rituals and functions performed in the temple situated at Nathdwara near Udaipur in Rajasthan. Notice how the image is dressed in traditional garments and adorned with flowers and jewellery. During the medieval period, the *bhakti* movement was responsible for the enrichment of many modern Indian languages. Saints, poets and musicians composed and sang verses in praise of gods and goddesses.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training
Published by Director, Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi
Printed at Aravali Printers & Publishers Pvt. Ltd., New Delhi-110020
2013